

हिंदी पत्रिका

सुबह

संयुक्तांक-2022

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, केंद्रीय, कोलकाता



पत्रिका परिवार

संरक्षक

सुश्री देबोलीना ठाकुर
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), कोलकाता

परामर्शदाता

सुश्री तनुश्री बिश्वास
उपनिदेशक (प्रशासन)

संपादक

श्री रमेश झा
हिंदी अधिकारी

सदस्यगण

श्री रंजन कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सुश्री नीलम कुमारी साव
कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री प्रज्ञा
कनिष्ठ अनुवादक

स्वत्वाधिकार

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, केंद्रीय, कोलकाता

प्रकाशन

सुबह



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

अंक

संयुक्तांक-2022

प्रकाशक

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, केंद्रीय, कोलकाता

गवर्नमेंट ऑफ इंडिया प्रेस बिल्डिंग (ईस्ट विंग), प्रथम तल

8, किरण शंकर रॉय रोड, कोलकाता-700001



महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
कोलकाता



संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "सुबह" का संयुक्तांक 2022 हमारे समक्ष है। अपने राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान के समान ही राजभाषा हिन्दी को सम्मान एवं गौरव प्रदान करना हमारा कर्तव्य है। रचनाकारों ने अपनी कविताओं और लेखों के माध्यम से अपने मन के भावों और विचारों को बहुत ही सरल एवं रुचिकर ढंग से प्रस्तुत कर इस कर्तव्य को बखूबी निभाया है। पूर्ण विश्वास है कि आगे भी यह क्रम जारी रहेगा।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन पर संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं देती हूँ।

डी. ठाकुर

(देबोलीना ठाकुर)

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), कोलकाता



महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय (केंद्रीय),
कोलकाता

संदेश

कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "सुबह" के संयुक्तांक 2022 के प्रकाशन पर अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। पत्रिका में कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की लेखनी के माध्यम से दिया गया योगदान सराहनीय है। रचनाएँ अभिव्यक्ति की क्षमता में वृद्धि के साथ-साथ भाषा में पकड़ को भी मजबूत बनाती हैं। हमारी गृह पत्रिका ने निःसंदेह कार्यालय में हिन्दी भाषा के प्रयोग में सतत वृद्धि एवं हिन्दी के प्रति सकारात्मक वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मैं रचनाकारों को राजभाषा हिन्दी के प्रति उनकी अतुलनीय निष्ठा के लिए और संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु हृदय से धन्यवाद के साथ पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ देती हूँ।

(तनुश्री विश्वास)
उप निदेशक



संपादक की कलम से...

प्रिय पाठकों.....

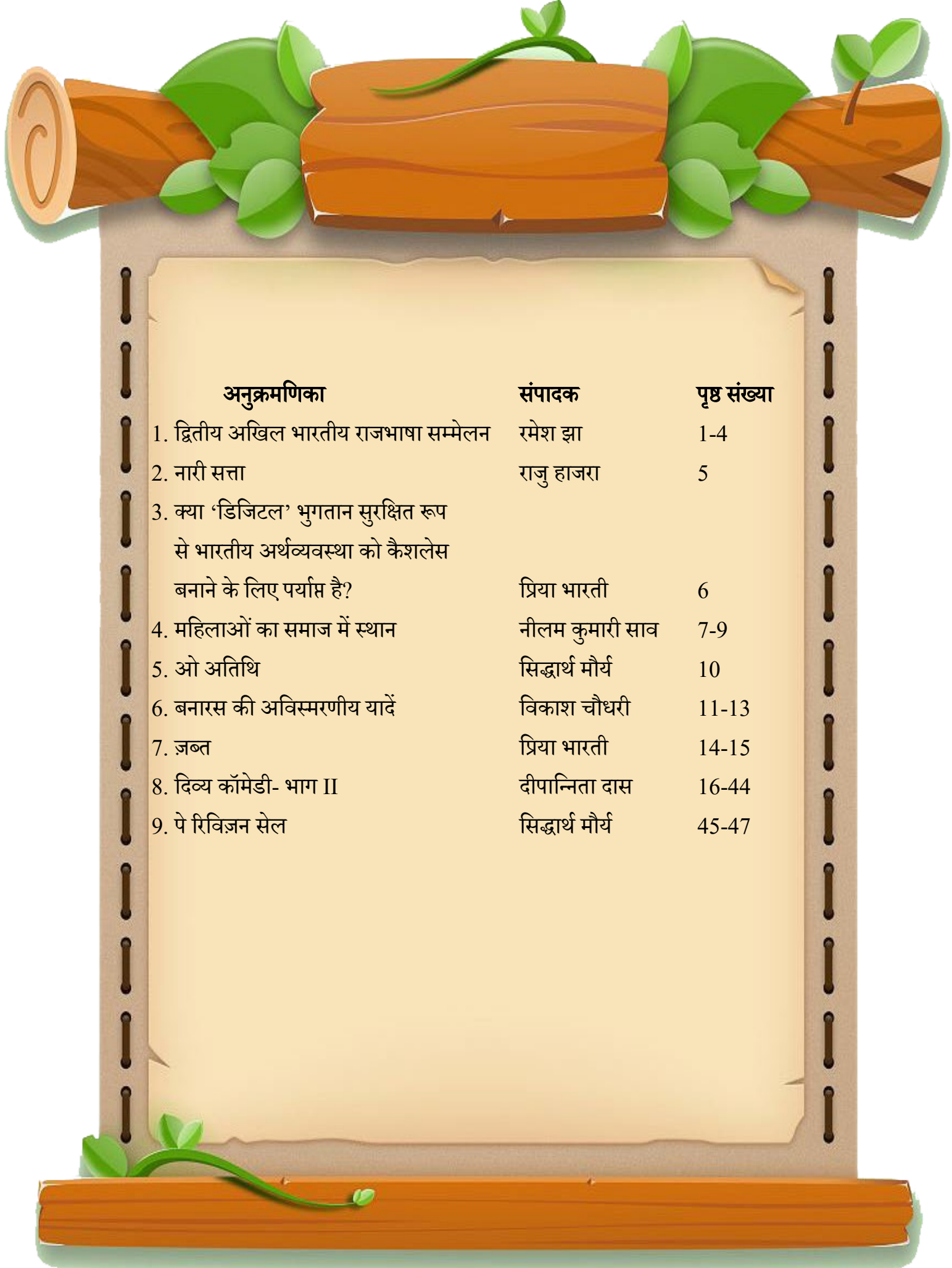
“सुबह” पत्रिका का संयुक्तांक वर्ष 2022 आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। सूर्य की नई किरणों से सुसज्जित सुबह के समान यह अंक रचनाकारों के नव रचनाओं से सुसज्जित है। आशा करता हूँ कि प्रस्तुत अंक आप सभी पाठकों को पसंद आएगा और हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु पत्रिका का मुख्य उद्देश्य पूरा हो सकेगा।

हिन्दी अन्य भाषाओं के शब्दों को अपने में समाहित कर लेती है और अपने इसी गुण के कारण हिन्दी को सहज एवं सरल भाषा कहा जाता है। आज के इस कंप्यूटर युग में जिस प्रकार सूचनाओं को सहेजना एवं साझा करना आसान हो गया है और यूनिकोड के कारण कंप्यूटर एवं मोबाइल में भी हिन्दी का प्रयोग आसान होने के कारण इसके उपयोग का प्रचलन बढ़ रहा है। देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता को देखते हुये विदेशों में भी हिन्दी का प्रचलन बढ़ा है तो हमें भी अपनी इस समृद्धशाली भाषा का प्रयोग अधिक से अधिक बढ़ाना है। राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हम संकल्पित हैं कि हम केवल औपचारिकता के लिए हिन्दी का प्रयोग नहीं करेंगे अपितु अपनी दिनचर्या में हिन्दी के शब्दों का अधिकाधिक उपयोग करेंगे।

पत्रिका के आगामी अंको को अधिक सफल बनाने हेतु पाठकों के बहुमूल्य सुझाव एवं प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी। कार्यालयी कार्यों से इतर समय निकालकर पत्रिका के लिये रचनायें लिखकर प्रेषित करने वाले सभी रचनाकारों और पत्रिका के सफल प्रकाशन में योगदान देने वाले प्रत्येक व्यक्ति को बहुत-बहुत धन्यवाद।

रमेश झा

(रमेश झा)



अनुक्रमणिका

संपादक

पृष्ठ संख्या

1. द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन	रमेश झा	1-4
2. नारी सत्ता	राजु हाजरा	5
3. क्या 'डिजिटल' भुगतान सुरक्षित रूप से भारतीय अर्थव्यवस्था को कैशलेस बनाने के लिए पर्याप्त है?	प्रिया भारती	6
4. महिलाओं का समाज में स्थान	नीलम कुमारी साव	7-9
5. ओ अतिथि	सिद्धार्थ मौर्य	10
6. बनारस की अविस्मरणीय यादें	विकाश चौधरी	11-13
7. ज़ब्त	प्रिया भारती	14-15
8. दिव्य कॉमेडी- भाग II	दीपान्विता दास	16-44
9. पे रिविज़न सेल	सिद्धार्थ मौर्य	45-47

द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

रमेश झा
हिंदी अधिकारी

भारत सरकार गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के तत्वाधान में हिंदी दिवस समारोह 2022 एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का संयुक्त आयोजन 14 सितम्बर 2022 से 15 सितम्बर 2022 तक सूरत (गुजरात) के दीनदयाल उपाध्याय इंडोर स्टेडियम में बड़े भव्य एवं गरिमामयी रूप से मनाया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन भारत के माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के कर कमलों द्वारा किया गया। समारोह में माननीय मुख्यमंत्री (गुजरात) श्री भूपेंद्र भाई पटेल, गृह राज्य मंत्री अजय कुमार मिश्रा, नित्यानंद राय, निशीथ प्रमाणिक उपस्थित थे। समारोह के उद्घाटन के दौरान दीप प्रज्वलित करते समय वैदिक आचार्यों द्वारा-

शुभं करोति कल्याणम आरोग्यं धनसंपदा ।
शत्रुबुद्धि विनाशाय दीपज्योति नमोऽस्तुते

“चन्द्रमा मनसो जाताश्चक्षुः सूर्यो अजायता
श्रोत्रांवायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायता”

आदि प्रभृति मंत्रों का सस्वर पाठ बड़ा ही मनोहारी था। माननीय मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान एवं श्री अमित शाह जी द्वारा अपने उद्बोधन में हिंदी के प्रचार-प्रसार पर बल दिया गया। उन्होंने कहा मौलिक चिंतन मातृभाषा में ही आ सकती है। इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री ने हिंदी शब्द सिन्धु शब्द कोश तथा कंठस्थ 2.0 का विमोचन किया।

द्वितीय सत्र में श्री प्रसून जोशी ने हिंदी के स्वरूप और शब्दों के चयन पर बड़ा ही सूक्ष्म अंतर समझाया। उनका कथन -एस.एम.एस आना उतना दिल को नहीं छूता जितना यह कहना की संदेश आते हैं। राजपूत जी और जैन जी ने भी अपने विचार बड़ी दृढ़ता से रखे।

दूसरा दिन दिनांक 15.09.2022 का प्रथम सत्र था। इस सत्र का विषय “महात्मा गाँधी का भाषा चिंतन और राष्ट्र के एकीकरण में सरदार पटेल का योगदान के बारे में था।”

इस सत्र का शुभारंभ प्रो. रीता बहुगुणा जोशी ने अपने वक्तव्य से किया। उन्होंने बड़ी बारीकी से महात्मा गाँधी के भाषा चिंतन एवं सरदार पटेल के देश के एकीकरण में योगदान को चित्रित किया। प्रथमतः वक्ता महोदय लोगों की उपस्थिति देखकर अभिभूत हो गई फिर उन्होंने महात्मा गाँधी के भाषा चिंतन पर प्रकाश डाला:-

“गाँधी और पटेल के दायरे अलग-अलग हैं। गाँधी का चिंतन विश्व चिंतन है और वह युगों तक विश्व को एक दिशा देते रहेगा। दूसरी ओर वे एक राजनेता भी थे। जिसने देश को आजाद करवाया। गाँधी जी भारतीय भाषाओं को आगे बढ़ाना चाहते थे। वे जब दक्षिण अफ्रीका गए थे तो उन्होंने देखा कि आपस में लोग हिंदी में बात करते हैं। वे जब भारत आये तो भारतीय भाषाओं के उत्थान पर बल दिया।”

वक्ता महोदया ने आगे कहा कि मैकाले ने 1930 में अपने पिता को एक पत्र लिखा। जिसमें उन्होंने कहा कि मैंने भारत में एक ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित की है जो कुछ सालों में यहाँ की संतानों को अपनी भाषा से दूर कर देगा और लोग अपने धर्म से दूर हो जाएंगे।

गाँधी जी का कहना है कि हिंदी उनके लिए स्वराज का प्रश्न है। उन्होंने प्रांतीय भाषाओं के विकास पर भी बल दिया। गाँधी जी एक बार काशी विश्वविद्यालय गए वहाँ उपस्थित सभी वक्ताओं ने अंग्रेजी में भाषण दिया लेकिन गाँधी जी ने कहा **“मैं भी अपना भाषण अंग्रेजी में लिखकर लाया हूँ लेकिन मैं हिंदी में बोलूँगा।”** इसी तरह 1917 में भागलपुर में सभी वक्ताओं के अंग्रेजी में अपनी बात रखने के पश्चात् वे हिंदी में ही अपनी बात रखी। कांग्रेस के अधिवेशनों में भी उनका प्रयास होता था कि अधिकतर लोग अपनी बातें हिंदी में ही रखें। 1946 में उन्हें अपनी प्रार्थना सभा में कहा “राम” शब्द की तरह “हिन्दी” शब्द उसके लिए जादू है। अगर लोग इस शब्द को ग्रहण कर ले तो लोग उनके लिए जिएंगे और मरेंगे।

जब भारत स्वतंत्र हुआ तो पत्रकारों ने उनसे पूछा “आप दुनिया को क्या संदेश देना चाहते हैं” उन्होंने कहा “कृपया दुनिया को यह खबर दे दें “गाँधी अंग्रेजी भूल गए हैं”।

वक्ता महोदया ने राजभाषा के लक्ष्य को शत-प्रतिशत लागू करने पर बल दिया। महोदया ने अपने भाषण के दूसरे अंश में भारत के एकीकरण में सरदार पटेल के योगदान पर प्रकाश डाला। सरदार पटेल ने देशी रजवाड़ों को भारत में विलय करने का कार्य किया। उन्हें बिस्मार्क कहा जाता है। बिस्मार्क ने जर्मनी के 38 राज्यों का विलय किया था जिसमें उन्होंने 15-16 वर्ष लगे लेकिन पटेल ने 510 देशी रजवाड़ों को तीन वर्ष के भीतर ही भारत में विलय कर दिया। जूनागढ़ और हैदराबाद को बलपूर्वक भारत में विलय कर दिया। उनकी नेतृत्व क्षमता को देखकर बारदोली की महिलाओं ने उन्हें सरदार की उपाधि दी तथा महात्मा गाँधी ने उन्हें **“लौह पुरुष”** कहा।

सुभाष चन्द्र बोस को अंग्रेजी का अगाध ज्ञान रहते हुए भी उन्होंने हिंदी को सम्मान दिया। आजाद हिंद फ़ौज का गीत **“कदम-कदम बढ़ाए जा”** को चुना। भगत सिंह ने मेरा रंग दे बसंती चोला का गान किया। आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष के अंत में हिंदी के प्रयोग को अधिक से अधिक करने पर बल दिया।

इस सत्र के दूसरे वक्ता थे श्री राम मोहन पाठक, पूर्व कुलपति, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा। उन्होंने कहा कि हिंदी भाव और भावनाओं की भाषा है। **सोहन लाल द्विवेदी की कविता-**

चल पड़े जिधर दो डग-मग में
चल पड़े कोटि पग उसी ओर
गड़ गई जिधर भी एक दृष्टि
गड़ गए कोटि दृग उसी ओर

को दृष्टान्त देते हुए उन्होंने गाँधी जी के विशाल व्यक्तित्व का परिचय दिया। उन्होंने कहा अंग्रेजों ने भारत छोड़ दिया अब अंग्रेजी को प्रयास करना पड़ेगा।

राजभाषा की स्थिति उन्नयन हेतु उन्होंने श्री दुष्यंत कुमार की कविता-

**“हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि, ये सूरत बदलनी चाहिए।”**

उद्धृत कर कहा कि राजभाषा की सूरत बदलनी चाहिए। गाँधी जी ने भाषा के संदर्भ में मोक्ष की संकल्पना प्रदान की। अंग्रेजी को भारत से प्रयाण करना पड़ेगा। गाँधी जी का हिंदी के प्रेम में मूल काशी था। भारतेन्दु हरिश्चंद्र के नाटक का मंचन गाँधी जी के गृहनगर पोरबंदर में हो रहा था इसे गाँधी जी ने कई बार देखा तो उनके हृदय में स्वदेशी भाषा के प्रति प्रेम जगा। गाँधी जी के चंपारण आन्दोलन के समय स्थानीय भाषा की महत्ता का ज्ञान हुआ। गाँधी जी ने हिंद स्वराज में राजभाषा संबंधी विचार प्रकट किया है।

मेरे सपनों के भारत में गाँधी ने राजभाषा के पांच लक्षण बताये हैं। उन्होंने कहा था कि हम इतनी मेहनत अपने बच्चों को अंग्रेजी सिखाने में करते हैं, इससे बड़ी गुलामी क्या हो सकती है। हिंदी की सूरत बदलनी चाहिए और हिंदी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने का प्रयास होना चाहिए। अपने वक्तव्य के दूसरे अंश में सरदार पटेल के विषय में चर्चा की। पटेल ने वारदोली सत्याग्रह में गांधीजी के साथ महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने देशी रियासतों को भारत में एकीकृत कर एक महान कार्य किया। लोकतंत्र का जहाज जहाँ भटकता है गाँधी जी और सरदार पटेल रूपी प्रकाश पुंज हमारा मार्गदर्शन करता है। राजभाषा की अवधारणा इन्हीं दो महापुरुषों की देन है।

उन्होंने विशेष रूप से आह्वान किया कि हिंदी को राजभाषा के स्थान पर कर्तव्य भाषा के रूप में अंगीकृत और व्यवहृत किया जाना उचित होगा।

इस सत्र के दूसरे वक्ता थे- श्री रमाशंकर दुबे, कुलपति, गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर। उन्होंने अपने उद्गार इस प्रकार व्यक्त किए:-

गुजरात की पवित्र धरती महात्मा गाँधी की है। गुजरात की धरती सरदार पटेल की धरती है। इसी भूमि से गांधीजी ने विश्व शांति सन्देश दिया था। गुजरात की धरती मन-भावन है। इसी धरती से लौह पुरुष सरदार पटेल ने देशी रियासतों का एकीकरण कर महान भारत का निर्माण किया। हिंदी हमारी राजभाषा है और राष्ट्रभाषा बनने की ओर अग्रसर है। हिंदी भारत को जोड़े हुए है और भारत के बाहर भी पढाई जाती है। महात्मा गाँधी जब अफ्रीका से आ रहे थे तब जहाज पर हिन्द-स्वराज की रचना की। मैकाले की चर्चा करते हुए गाँधी ने कहा कि मैकाले ने न सिर्फ हमारी शिक्षा पद्धति को बर्बाद किया बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर को भी नष्ट किया।

भारत की समृद्धि इसकी हजारों-हजार साल पुरानी संस्कृति है। जो भी बाहर से आये उन्होंने इसकी प्रशंसा की चाहे मैकाले हो या कोई और। मैकाले द्वारा थोपी गयी शिक्षा पर महात्मा गाँधी का विचार था कि यह हमें अंग्रेजों की गुलामी की ओर ले जा रहे है। महात्मा गाँधी ने 'हिंद-स्वराज' में लिखा कि यहाँ के लोग अपने-अपने बच्चों को नीति-शिक्षा दें, सदाचार की शिक्षा दें और यह शिक्षा अपनी निजी भाषा में दें। गुजरात के अधिवेशन में उन्होंने कहा कि देश के एकीकरण के लिए एक भाषा की जरूरत है जो केवल हिंदी हो सकती है।

भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए महामना मदन मोहन मालवीय ने 1916 में हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। उसका उद्घाटन महात्मा गाँधी ने किया था। इसमें सभी वक्ताओं ने अंग्रेजी में भाषण दिया। ऐनी बेसेंट के टोकने के बावजूद उन्होंने अपना भाषण हिंदी में दिया। महात्मा गाँधी ने कहा कि इस विश्वविद्यालय के अंदर अंग्रेजी में भाषण देना अपमान है।

सरदार पटेल ने 512 देशी रियासतों का एकीकरण किया और 2019 में धारा 370 को समाप्त कर यह कार्य पूर्णतः पूरा हुआ।

इस सत्र के अगले वक्ता थे- माननीय श्री हृदय नारायण दीक्षित, अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश विधानसभा। उन्होंने कहा कि मैं एक छोटे से जिले से आकर आप सभी के साथ संवाद कर रहा हूँ यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है। मैं जो रटकर आया वह पहले के वक्ताओं ने बोल दिया अब मैं टटोल-टटोल कर बात करूंगा। उन्होंने कहा कि एक बार दर्शनशास्त्र पर अपनी व्याख्यान दे रहे थे तो लोग उनकी ओर ध्यान नहीं दे रहे थे। जैसे ही उन्होंने अपने सामने रखे माइक को देखकर कहा कि मि. माइक ने कहा है तो लोग अचानक उनकी बात गंभीरता से लेने लगे। यदि मैं गोस्वामी तुलसीदास का उद्धरण गोस्वामी टी डी (यानि तुलसीदास) के रूप में दूँ तो अचानक लोगों का ध्यान आकर्षित होने लगता है।

हिंदी और अन्य जनभाषा स्वतंत्रता संग्राम की भाषा थी। लेकिन उस समय के राजनीतिज्ञों के मन में अंग्रेजी रची बसी थी। महात्मा गाँधी ने कहा था कि वे अंग्रेजी को भी भारत से बाहर खदेड़ देंगे। कांग्रेसी शासन में संघ लोक सेवा आयोग का माध्यम अंग्रेजी था। लेकिन मोरारजी देसाई के समय क्षेत्रीय भाषाओं को इसमें सम्मिलित किया गया।

गाँधी जी ने 1930 में कहा कि मैं हिंदी बोलता हूँ। अगर मैं अंग्रेजी बोलता हूँ तो मुझे पाप लगता है। वायसराय से भी बात करो तो अपनी भाषा में बात करो। उन्होंने संविधान सभा में हिंदी के संबंध में आयोग का उल्लेख करते हुए कहा कि आयोग इसे समृद्ध भाषा नहीं मानते थे। लेकिन आज वह स्थिति नहीं है। राजभाषा विभाग इसे पूर्ण समर्थ बनाने में पूर्ण रूपेण प्रयास कर रहा है।

दिनांक 15.09.2022 दूसरे दिन का दूसरा सत्र, ‘भाषाई समन्वय का आधार है हिंदी’- विषय पर था। इस सत्र में मुख्य वक्ता श्री अलोक मेहता, वरिष्ठ पत्रकार थे। उन्होंने कहा- हर भाषा जोड़ने का कार्य करती है। प्रांतीय भाषाओं को सहेजने का कार्य हिंदी द्वारा बखूबी किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि “अनुवाद सहज और सरल भाषा में हो, मशीनी और कठिन भाषा में नहीं”।

इस सत्र में दूसरे वक्ता शास्त्री जी थे। वे संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे तथा उन्होंने अपनी बात बड़ी गंभीरता से रखी। इस सत्र के तीसरी वक्ता थी- सुश्री संगीता यादव जी जिन्होंने हिंदी के प्रयोग में आने वाली व्यावहारिक कठिनाई और अंग्रेजी के अनावश्यक प्रभाव पर चर्चा की। इस सत्र की चौथी वक्ता थी श्रीमती पूनम बेन हेमत भाई – संसद सदस्य, लोकसभा जिन्होंने अपनी बात बड़ी दृढ़ता से रखी।

इस दिन का अंतिम सत्र का विषय- भारतीय सिनेमा और हिंदी था। इस सत्र के प्रथम वक्ता आयुक्त, सूरत थे। उन्होंने हिंदी के क्रमिक विकास पर विद्वतापूर्ण विचार रखे। पूरे सम्मेलन के दौरान सिर्फ उन्हीं के विचारों को सुनकर लोगों ने खड़े होकर तालियाँ बजाईं। महेश मांजरेकर – फिल्म निर्माता एवं निर्देशक द्वितीय वक्ता थे। उन्होंने जनसमूह के साथ संवाद किया। प्रो. संजय द्विवेदी ने महानिदेशक भारतीय जनसंचार संस्थान ने फिल्मों में उर्दू के प्रयोग पर प्रकाश डाला। अंतिम वक्ता डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी, फिल्म निर्माता और निर्देशक थे। उन्होंने संस्कृतनिष्ठ हिंदी और उर्दू के सामंजस्य पर प्रकाश डाला।

इसके बाद इस भव्य एवं गरिमामय आयोजन का समापन हुआ।

नारी सत्ता

राजु हाजरा

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)

ले प्रण उठा अब शस्त्र लिए,
हर चुनौती है मुझको स्वीकार।
हर बाजी अब मैं जीतूँगी,
होगी निश्चित शत्रु की हार।

पग में काँटे चुभने पर भी,
'उफ' मुख से निकल ना पायेगा।
देश प्रेम के ही खातिर,
अब छोड़ दिया मैंने घर-बारा।

ना, माँ के आँचल की छाया,
ना, बाबा की लोरी होगी।
तप के सोना ही निकलेगा
सहते-सहते शत्रु के वारा।

मन से कोमल, तन फौलादी,
ज्वाला धधकी है अंतर में।
कुछ करना है जग में, हटकर,
जीना नहीं, अब मन को मार।

बाधा नागिन सी काली रात,
भय तम का मन से दूर करो।
अब सुनों हमारी ये विनती
ज्ञान का, मन में, हो विस्तार।

नहीं आज मेरा कोई सानी,
चार शुत्रों पर, मैं, एक हूँ भारी।
रौद्र रूप धारण कर
नारी शक्ति करती संचार

चमकूँ मैं, सूरज-चाँद सी,
बन फूल प्रभु के चरणों में।
अर्पण अब मेरा तन-मन-धन,
प्रभु खोल भी दो मुक्ति के द्वार।

क्या 'डिजिटल' भुगतान सुरक्षित रूप से भारतीय अर्थव्यवस्था को कैशलेस बनाने के लिए पर्याप्त है?

प्रिया भारती
लेखापरीक्षक

सभ्यता की शुरुआत के बाद से, मनुष्य को हमेशा व्यापार करने, मापने और राशि को संचित करने के लिए मुद्रा की आवश्यकता होती है। मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ मुद्रा के स्वरूप में भी परिवर्तन आया है। वस्तु विनिमय से लेकर 'बिटकाइन' (Bitcoin) तक और कागजी मुद्रा से लेकर 'प्लास्टिक मनी' तक, मुद्रा का उपयोग सुविधाजनक रहा है। आजकल आपको 'प्लास्टिक मनी' (डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड) ले जाने की भी आवश्यकता नहीं है, 'डिजिटल इण्डिया' की बदौलत सब कुछ हमारी उंगलियों पर उपलब्ध है लेकिन क्या यह इतना सरल और सहज है?

हम सभी जानते हैं कि भारत दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी आबादी वाला देश है और यह विशाल आबादी विभिन्न प्रकार की स्थलाकृति में रहती है। सरकारी आंकड़ें बताते हैं कि एक शहरवासी और एक ग्रामीण के लिए सभी सेवाएं समान रूप से उपलब्ध नहीं हैं। हमारे देश में कितने गांव आज भी बिजली की पहुंच से दूर हैं। इसलिए, 'डिजिटल भुगतान' के लिए सबसे बड़ी चुनौती उचित इंटरनेट कनेक्शन और बिजली की कमी है।

एक और समस्या यह है कि एक बड़ी आबादी अभी भी निरक्षर है और उनमें से कई साक्षर हैं जो ऑनलाइन भुगतान करना नहीं जानते हैं। इसलिए ये लोग 'साइबर खतरे' (cyber threats) और 'ऑनलाइन धोखाधड़ी' (online fraud) के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील हैं।

अब, हम समाधान पक्ष पर आते हैं। सबसे पहले, सरकार को हर गांव को जोड़ने की जरूरत है - बिजली की आपूर्ति और उचित इंटरनेट कनेक्शन से - चाहे वह कितना भी दूर क्यों न हो, ताकि कोई भी व्यक्ति जो डिजिटल माध्यम अपनाना चाहता है, आसानी से वह विकल्प चुनकर 'स्विच' (switch) कर सके। दूसरा, जो नई व्यवस्था सीखना चाहता है, उसे उचित 'डिजिटल शिक्षा' देना सरकार की जिम्मेदारी है। इसके अलावा, 'डिजिटल लेन-देन' के लिए कड़े नियमन होने चाहिए ताकि कोई भी ऑनलाइन धोखाधड़ी न कर सके।

यदि भारत इस तरह के कदम उठाता है, तो भारतीय अर्थव्यवस्था 'कैशलेस' (cashless) होने के लिए 'डिजिटल भुगतान' काफी सुरक्षित होगा। हमें डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देना चाहिए क्योंकि 'डिजिटल दुनिया' ही भविष्य का सत्य है।

महिलाओं का समाज में स्थान

नीलम कुमारी साव,
कनिष्ठ अनुवादक

देखो नई नारी वह खड़ी है,
नई नारी खड़ी है, पुरुषों से अपनी जगत माँगती हुई
समाज से न्याय वसूल करती हुई, समाज को चुनौती देती हुई,
अब तक मुझसे आँख लड़ाए हो
अब आओ मुझसे हाथ मिलाओ,
देखो वह नई नारी सामने अंतरिक्ष पर, जगमग कर रही है:-

उपर्युक्त पंक्तियों में रामवृक्ष बेनीपुरी ने जिस नारी के बारे में कहा है, वह आधुनिक युग की नारी है जो सब कुछ करने में सक्षम है, चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो या कला का या विज्ञान या समाज कल्याण या प्रतियोगिता का क्षेत्र हो वह हर क्षेत्र में पुरुष को पीछे छोड़ कर आगे आने वाली सबल स्त्री है। यह जो आधुनिक नारी है, वह पुरुषों की अनुगामी नहीं बल्कि वह इतनी सक्षम है कि वह अपने उचित क्षेत्र का चुनाव स्वयं कर सकती है।

नारी सामाजिक जीवन की आधारशिला है। नर और नारी एक सिक्के के दो पहलू हैं। गृहस्थी की गाड़ी में घरघड़ाहट तभी उत्पन्न होता है जब पुरुष स्त्री रूपी गाड़ी के दोनों पहिए सक्रिय हों। अतः किसी भी राष्ट्र की उन्नति तभी सम्भव है जब वहाँ नर-नारी का भेद-भाव न हो और नारी के व्यक्तित्व को विकसित करने पर जोर दिया जाए। आधुनिक समाज में नारी ने जो यह सर्वोपरि स्थान प्राप्त किया है इसके पीछे उसका कठोर संघर्ष है।

प्राचीन काल में नारियों की स्थिति बहुत अच्छी थी। उन्हें समाज में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त था। उस समय वे पुरुषों के बराबर स्थान प्राप्त करती थी इसलिए उन्हें प्राचीन काल में अर्धांगिनी कहा गया। मैत्री, गार्गी, जैसी विदुषी महिलाओं के नाम प्राचीन काल में जितने श्रद्धा के साथ लिया जाता था आज के युग में भी वे उतनी ही श्रद्धा की पात्र हैं। उस समय नारी को बहुत सम्मान प्राप्त था अतएव उनके अपमान का प्रश्न ही नहीं उठता था लेकिन मुसलमानों के आगमन के बाद उनकी स्वतंत्रता पूरी तरह से नष्ट कर दी गई और पर्दाप्रथा, बालविवाह, बहुविवाह जैसी कुरीतियों का उन्हें शिकार बनना पड़ा। मध्यकाल में तो उनकी दशा इतनी बुरी थी कि तुलसीदास जैसे महान कवि को यहाँ तक कहना पड़ गया कि-

ढोल, ग्वाँ, शुद्र, पशु, नारी, ये सब ताड़ण के अधिकारी।

अर्थात् नारी ताड़न की पात्र बन गई और रीतिकाल में तो इन्हें केवल विलासिता की वस्तु मान लिया गया। इस समय केवल इनके बाह्य रूप का चित्रण किया गया और उस चित्रण को करने में उस समय के कवियों ने इनकी मर्यादा तक को रौंद डाला लेकिन आजादी के समय ये खुलकर बाहर आयी और इस स्वतंत्रता संग्राम में इन्होंने भाग लिया। ये सब इनके अंदर आई चेतना का ही प्रमाण था। देश में आजादी के बाद उन्हें पुरुषों की ही तरह मताधिकार का अधिकार मिला और पुरुषों की ही तरह उन्हें कई अधिकार मिले।

हमारे देश की जनसंख्या 1.4 अरब (लगभग) की सीमा को पार कर चुका है, जिसमें से आधी जनसंख्या महिलाओं की है और उसमें से भी अधिक महिलाएँ अशिक्षित हैं। पुरुषों के समान बराबर मात्रा में होने के बावजूद भी उन्हें पुरुषों के समान बराबर अधिकार नहीं मिले हैं इसलिए आधुनिक महिलाएँ अपने सारे अधिकार ब्याज सहित वसूल करने के लिए तत्पर हैं लेकिन इनके इस मार्ग में अशिक्षा रोड़े का पत्थर साबित हो रहा है जिसे



दूर करना इनके लिए नितान्त आवश्यक है। महिलाओं का शिक्षित होना अनिवार्य है क्योंकि यह माना जाता है कि महिलाओं का शिक्षित होना न केवल एक व्यक्ति का शिक्षित होना है बल्कि पूरे परिवार का शिक्षित होना है। चूँकि गाँवों में अधिकांश जनसंख्या निवास करती है इसलिए गाँवों में निरक्षर महिलाओं की संख्या अधिक है। अतएव हमें गाँवों की महिलाओं की शिक्षा के तरफ भी ध्यान देना होगा ताकि वे अपने अधिकार को अच्छी तरह समझ सकें।

बड़े हर्ष का विषय है कि भारत सरकार महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए महिला आयोग जैसी संस्थाएं एवं अन्य कई योजनाएं चला रही है। महिलाओं के सुधार से संबंधित ये संस्थाएँ इनके उन्नति के लिए प्रशंसनीय कार्य कर रही हैं। आज भारत सरकार न केवल महिलाओं की स्थिति को सुधारना चाहती है बल्कि उनका विकास भी चाहती है। 1977 ई. को महिला वर्ष के नाम से जाना जाता है।

अब आधुनिक युग की महिला मैथिलीशरण गुप्त की वह महिला नहीं है:-

**अबला जीवन हाया तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी ॥**

बल्कि आज की महिला सशक्त है वह आज हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ होड़ करने से पीछे नहीं, वह हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ-साथ कंधा से कंधा मिलाकर चलने योग्य है या यह कहें कि हर क्षेत्र में उनसे भी दो कदम आगे बढ़ रही है। आज की महिला आत्मनिर्भर, स्वावलंबी और निर्भीक है वे इस तथ्य को खंडित करती है कि :-

**पिता रक्षति कौमारे, भार्ता रक्षति यौवने,
पुत्र रक्षति वाद्वक्ये, न नारी स्वतंत्रमर्हते**

आज भले ही नारी हर क्षेत्र में स्वतंत्र है। वह जागृत हो गई है लेकिन कुछ दुर्बलाताओं को उसने अब तक नहीं छोड़ा है। वह है, उसका पुरुषों को अपने साज-श्रृंगार सौंदर्य और देह-प्रदर्शन के द्वारा मोहने की प्रवृत्ति। इस प्रवृत्ति के चलते वह आज भी पुरुषों की नजर में एक सुंदर खिलौना बनकर रहना चाहती है और उसकी इस प्रवृत्ति के चलते पुरुष मात्र उसे कामेच्छा पूरी करने की वस्तु समझते हैं। अगर उसने अपने इस प्रवृत्ति को न छोड़ा तो वह मात्र विज्ञापन की वस्तु बन कर रह जायेगी।

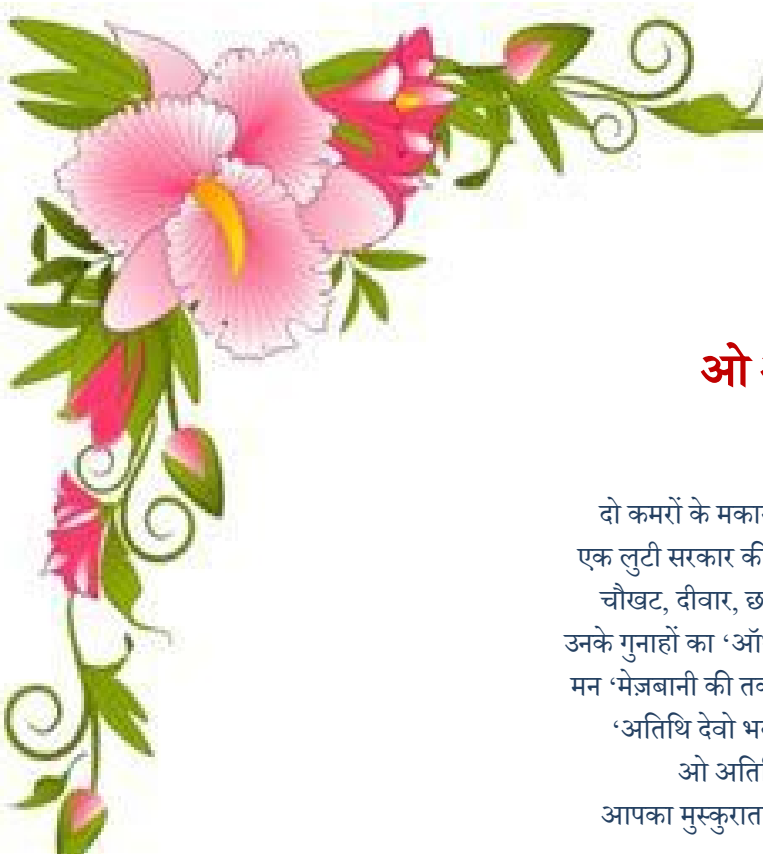
पुरुष प्रधान समाज में नारी एक सर्वशक्ति के रूप में उभर कर सामने आ रही है। हमारे सामने ऐसे कई नारियों के उदाहरण हैं जिन्होंने भारत का नाम न केवल अपने देश में बल्कि पूरे विश्व में प्रसिद्ध किया है जैसे:- इंदिरा गाँधी, सरोजनी नायडू, विजय लक्ष्मी पंडित, मीरा कुमार, कल्पना चावल आदि। इस समाज में न केवल उन्होंने प्रतिष्ठा प्राप्त की है बल्कि इस समाज के कतिपय गंदी मानसिकता रखने वाले लोगों ने उनकी आगे बढ़ने की इस मानसिकता का फायदा उठाकर उनकी भोली-भाली मानसिकता को चोट पहुँचाकर उनका शोषण भी किया है। आए दिन हमें हर तरफ एक नारी शोषण की ऐसी गूँज सुनाई पड़ती है जो एक दूषित समाज की मानसिकता को प्रकट करता है जैसे दामिनी बलात्कार कांड, तेजपाल कांड। यही नहीं, आज छोटी से छोटी

बच्ची भी इस शोषण का शिकार बनती है। भले ही आज नारी चाँद तक पहुँच गई है लेकिन पुरुषों के इस समाज में वह आज भी एक शोषित वर्ग ही है जो एक समाज के लिए भयंकर अभिशाप है।

कुल मिलाकर देखा जाए तो आज के युग में नारी की जो स्थिति है वह दो तरफों में बँटी है एक तरफ वह चाँद पर पहुँच गई है और बहुत आगे बढ़ रही है और इस दौड़ में उसने पुरुषों को भी पीछे छोड़ दिया है लेकिन दूसरी तरफ शिक्षा के अभाव में वह आज भी शोषित है। अतः हमारा यह कर्तव्य है कि हम नारी की उचित शिक्षा की व्यवस्था करें। उनके लिए काम-धंधे की व्यवस्था करें। उन्हें सेक्स संबंधित शिक्षा प्रदान की जाए ताकि उनका शोषण न हो सके साथ ही साथ उन्हें आत्मरक्षा के लिए भी तैयार किया जाना चाहिए क्योंकि नारी ही समाज की आधारशिला है इनके बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती अतः-

**नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में
पीयूष स्रोत सी बहा करों, जीवन के सुंदर समतल में।**





ओ अतिथि!

सिद्धार्थ मौर्य
लेखापरीक्षक

दो कमरों के मकान में हम चार का परिवार
एक लुटी सरकार की उजड़ी विरासत लगता है,
चौखट, दीवार, छत, रसोई और शौचालय
उनके गुनाहों का 'ऑथराइज्ड हिरासत' लगता है,
मन 'मेज़बानी की तकल्लुफ़' से हो कर आजिज़
'अतिथि देवो भवः' का सार भुलाता है,
ओ अतिथि! न जाने क्यों
आपका मुस्कुराता मुखड़ा बड़ा रुलाता है।

हर सहजता से करके समझौता
हम बेचारे प्रतिष्ठा में आराम गँवाते हैं,
और अपनी रोज़मर्रा की गतिविधियों में भी
बदला-बदला सा अंदाज़ पाते हैं,
उस 'लाख्त-ए-जिगर' के दीदार में इन दिनों
ये कमबख्त रात भी 'बारह' के बाद सुलाता है,
ओ अतिथि! न जाने क्यों
आपका मुस्कुराता मुखड़ा बड़ा रुलाता है।

टीवी का रिमोट भी आजकल
हर पहर उन संग ही ताल से ताल मिलाता है,
'तारक', 'कपिल' और 'भाभी जी' से हो ख़फ़ा
'रवीश', 'अरनब' संग 'फेकिंग न्यूज़' चिल्लाता है,
आपसी हँसी-ठिठोली अब
किसी गुज़रे ज़माने का इतिहास याद दिलाता है,
ओ अतिथि! न जाने क्यों
आपका मुस्कुराता मुखड़ा बड़ा रुलाता है।

माँ की रसोई तेल, मसालें, रिफ़ाइन्ड में होकर लिप्त
किसी रेस्तरां का शेफ़ स्टेशन हो जाता है,
हेल्दी फूड से इतने दिन होकर दूर
गैस्ट्रोएन्टेरोलॉजिस्ट ही अगला डेस्टीनेशन हो जाता है,
कब्ज़, गैस, बदहजमी और इनके सारे सगे
पल-पल दिल के पास बुलाते हैं,
ओ अतिथि! न जाने क्यों
आपका मुस्कुराता मुखड़ा बड़ा रुलाता है।

बनारस की अविस्मरणीय यादें

विकास चौधरी

डी.ई.ओ.

सावन के पावन दिन पर रास्ते से गुजरते हुये कांवरियों के समूह से बाबा भोलेनाथ की जय जयकार को सुन बाबा विश्वनाथ की नगरी बनारस की यादें ताज़ा हो गईं। वहाँ की कुछ यादें आप लोगों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। पिछले महीने मैं अपने परिवार के साथ बनारस गया था। बनारस पहुँचने के बाद हम लोगों ने अपनी यात्रा काल भैरव के दरबार से प्रारंभ किया, धार्मिक मान्यता है कि ‘बाबा विश्वनाथ’ काशी के राजा हैं और काल भैरव उनके कोतवाल, जो लोगों को आशीर्वाद भी देते हैं और सज़ा भी। कहा जाता है कि काल भैरव के दर्शन मात्र से शनि की साढ़े साती, और शनि दण्ड से बचा जा सकता है।

उनके दर्शन के बाद हम सब ‘काशी विश्वनाथ’ के मंदिर गये। तब संध्या हो चुकी थी। मंदिर पहुँचने पर बाबा भोलेनाथ की आरती हो रही थी, जो अत्यंत दिव्य थी। पूरे वातावरण में बाबा भोलेनाथ की गूँज से मन प्रफुल्लित हो गया, लग रहा था मानों भगवान शंकर स्वयं धरती पर आकर भक्तों को दर्शन दे रहे हैं, यह एक अद्भुत अहसास था। आरती समाप्त होने के पश्चात् हमलोग वापस अपने गंतव्य को पहुँचे जहाँ हमारे ठहरने का स्थान बाबा मंदिर के पास ही था। संध्या आरती के बाद हमने मंदिर के पुजारियों से सुबह के दर्शन और पूजन का समय पूछा तो पता चला कि सुबह 6:00 बजे से दर्शन और आरती होती है लेकिन भक्तों की कतार 3:00 - 4:00 बजे से ही लगने लगती है। समयानुसार पहुँचने पर कुछ समय की प्रतीक्षा के बाद ही दर्शन हो जाता है।

हम सब सुबह 5:00 बजे मंदिर के प्रांगण में पहुँचे और फिर करीब 6:30 बजे हम बाबा के दरबार पर पहुँचे। अंदर प्रवेश करते ही एक अलौकिक अनुभूति हुई, उस अहसास का वर्णन शब्दों में कर पाना असंभव है। भगवान शिवजी साक्षात् लिंग रूप में वहाँ विराजमान हैं, धार्मिक मान्यता है कि यहाँ जो भी भक्त सच्चे मन से बाबा को जल अर्पण करते हैं, उनकी सारी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं, तथा मरणोपरांत मोक्ष की प्राप्ति होती है। हमने शिवलिंग पर जल अर्पण किया और पूजा अर्चना की।

मंदिर प्रांगण में और भी देवी देवताओं का वास है। मंदिर के सभी देवी देवताओं का दर्शन एवं पूजन करने के पश्चात् हम सब बनारस के घाट की तरफ बढ़ने लगे। बनारस को घाटों का शहर भी कहा जाता है एवं यहां पर आपको हर सड़क और चौराहे पर मंदिर ही मंदिर देखने को मिलेंगे। बाबा मंदिर के पीछे ‘दशाश्वमेध’ घाट है। यहाँ पहुँचकर हमने देखा कि वहाँ पर कई नौकाएं खड़ी थीं। सभी घाट उचित किराए पर घूमने हेतु हमने यहां एक नाविक का चयन किया।

हमलोगों के नाव में सवार होते ही नाव तेज़ी से दूसरे घाटों के लिए बढ़ा। पौराणिक स्रोतों के अनुसार, बनारस में लगभग 88 घाट हैं। नदी के तट पर पाँच प्रमुख घाट हैं, जो कि काशी के पवित्र शहर में हैं। ये ‘अस्सी’ घाट, ‘दशाश्वमेध’ घाट, ‘मणिकर्णिका’ घाट, ‘पंचगंगा’ घाट और ‘आदि केशव’ घाट हैं।

हमने क्रमानुसार करीब 12-11 प्रमुख घाटों का दर्शन किया। मुख्य तौर पर, नौका विहार करने के समय, घाट के किनारे चलने वाली तेज़ हवा तन और मन को और भी मंत्रमुग्ध कर रहा था, बहुत ही अच्छा महसूस हो रहा था। हमलोग करीब 2 घंटों नौका विहार के बाद वापस अपने गंतव्य को पहुँचें। फिर, आहार और थोड़ा आराम करने के बाद, हम सब वहाँ के प्रसिद्ध बाज़ार, *गौधुलिया चौक* के तरफ घूमने निकले।

वहाँ चहल-पहल और सजावट के सामानों से भरा-पूरा बाज़ार था – रंग-बिरंगी रोशनी बिखरे, तरह-तरह के वस्त्र, आभूषण और सारी ज़रूरत के सामानों से सजा हुआ और खाद्य पदार्थों से वह पूरा बाज़ार भरा था। यह बाज़ार '*दशाश्वमेध*' घाट के पास था। यहाँ घूमने के पश्चात्, हम सब '*दशाश्वमेध*' घाट पहुँचें जहाँ गंगा आरती हर शाम होती है।

यहाँ की आरती काफी भव्य होती है, गंगा आरती जल से, पुष्प से, आकाश से, वायु से और अग्नि, इन पाँच तत्वों से होती है। घाट के किनारे पंडा समुदाय के बहुत सारे लोग एक तरह का पहनावा ओढ़े हाथों में विशाल आरती दीप को घुमाते हैं। यह आरती करीब दो घंटे तक होती है। हमारा मन प्रफुल्लित हो गया – इतना भव्य नज़ारा हमने प्रथम बार देखा। एक अलग ही अनुभूति हुयी। आरती के बाद, प्रसाद वितरित हुआ। प्रसाद ग्रहण करने के पश्चात्, हम सब वापस आए। अगली सुबह हम विंध्यवासिनी देवी मंदिर, विंध्यचल की ओर निकले।

धार्मिक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो इसका महत्व बहुत ज्यादा है। यह 52 शक्तिपीठों में से एक है। विंध्यवासिनी मंदिर में माँ की विशाल मूर्ति है जो कि अत्यंत ही अद्भुत है। इससे जुड़ी एक पौराणिक कथा है। इसके अनुसार कंस जब वासुदेव की पुत्री को पुत्र समझकर मारना चाहता थे, उस नवजात शिशु ने देवी दुर्गा का रूप धारण किया और कृष्ण द्वारा कंस के वध की भविष्यवाणी की। धर्म ग्रंथों के अनुसार इसे माँ दुर्गा का रूप '*महामाया*' कहा गया है, और इसी स्थान पर माता का वास है। विंध्यचल पर्वत के एक तरफ '*अष्टभुजा*' देवी मंदिर है और एक तरफ महाकाली का मंदिर है।

बनारस एक अद्भुत और शानदार शहर है। हालांकि बनारस इस शहर का प्राचीन नाम है, इसे अब *वाराणसी* के नाम से जाना जाता है। बनारस भारत के उत्तर प्रदेश राज्य में गंगा नदी के किनारे स्थित एक ऐसा शहर है जो हिंदुओं के लिए बहुत ही खास तीर्थ स्थलों में से एक है। यहाँ कई लोग मुक्ति और शुद्धिकरण के लिए भी आते हैं। हम सारे लोग वहाँ के मंदिरों और प्रमुख स्थानों पर घूमने गये। यहाँ के भोजन का स्वाद आप भूल ही नहीं सकते क्योंकि यहाँ का खान-पान इतना लाजवाब है।

बनारस में सुबह-सुबह कचौड़ी-सब्जी खाने का मज़ा ही कुछ और है। जलेबी के साथ खाने से इसका स्वाद दुगना हो जाता है। यहाँ एक प्रमुख स्थान है जिसका नाम '*लंका*' है। वहाँ पर स्थित '*चाची की दुकान*' की कचौड़ी बहुत मशहूर है। वैसे तो बाटी-चोखा और जलेबी कई जगहों पर मिलती है, लेकिन बनारस के बाटी-चोखा का स्वाद ही अलग है।

अरे! मैं तो एक बात का वर्णन करना ही भूल गया और वो है बनारस का पान। बनारसी पान का कोई जवाब नहीं। बनारस में खानपान की बात हो और पान का जिक्र न हो तो बात कुछ अधूरी सी रह जाती है। बनारस की शान और पहचान, दोनों हैं बनारसी पान, जिसके दीवाने सिनेमा जगत के कलाकार भी हैं। बनारस का बनारसी पान तो इतना मशहूर है कि इस पर गाने तक बन गये हैं जो आज भी सबकी जुबान पर रहता है।

और यहां की बनारसी साड़ी, साड़ियों में सर्वाधिक प्रसिद्ध है, जो मुख्य रूप से *वाराणसी* में बनाई जाती हैं। लाल, हरी और अन्य गहरे रंग की ये साड़ियां हिंदू परिवारों में किसी भी शुभ अवसर के लिए आवश्यक मानी जाती हैं। अधिकांश बहू-बेटियां बनारसी साड़ी में ही विदा की जाती हैं।

सच कहूँ, तो मैंने काफी यात्राएं की हैं, लेकिन बनारस में घूमने-फिरने और खाने-पीने का एक अलग ही अहसास था, बनारस की इतनी सारी और भी दिलचस्प बातें हैं कि जिसका जिक्र करते-करते कितने पन्ने भर जाएं, यह कहना मुश्किल है, अंत में बनारस के लिए बस एक ही बात कहना चाहूंगा कि, ‘भाई! मज़ा आ गया...

ज़ब्त

प्रिया भारती
लेखापरीक्षक

क्या-क्या ज़ब्त करता है इंसान
हँसी के होठों पर आने से पहले ही
जीभ से दबोच लेता है और
पी जाता है हर आँसू
छलकने से पहले
ज़हर की मानिंद

गर अपने हैं तो
उनसे छुपाना क्या
और गर पराए हैं
तो क्या फ़र्क पड़ जाएगा उन्हें
उसके हँसने या रोने से?

पर ये सब छुपाता किससे है?
उन लोगों से
जो उसके अपने हैं
या उनसे जो पराए हैं?

ज़ब्त करता है इंसान
अपनी हँसी, अपने आँसू
शायद इसलिए,
कि तो पहचान ही नहीं पाता कभी
कि ये जो लोग हैं,
उसके अपने हैं या पराए!

जब्त करता है इंसान
अपने ख्वाब अपनी इच्छाएं,
सिर्फ इस कशमकश में
कि बताए या न बताए,
कि जी नहीं सकता
वो अपने ख्वाबों के बिना,
कि दम घुटता है उसका
ये नकलीपन ओढ़कर

जब्त करता है इंसान
अपनी नींद
और बुनता है सुनहरे ख्वाब
ख्वाबों के उस मचान पर चढ़कर
देखता है सुकून की लहलहाती फसल ।
पर जब जिम्मेदारियों के ओले
फसल रौंद डालते हैं,
तो अपनी मायूसी को भी
जब्त कर लेता है इंसान।

जब्त करता है इंसान
अपनी भूख-प्यास ।
अपनी इच्छाएं और आस,
करता है संघर्ष एक बेहतर भविष्य के लिए
और जब वह भविष्य
वर्तमान की राजनीति का शिकार हो जाता है
तो अपने गुस्से की ज्वालामुखी को भी
जब्त कर लेता है इंसान ।

दिव्य कॉमेडी – भाग II

दीपानिता दास
कनिष्ठ अनुवादक

“वर्जिल! तुम उसकी मदद करो ताकि वह मेरे पास आ सके... मैं बिएट्रिस हूँ और स्वर्ग में अंततः ईश्वर के समक्ष प्रस्तुत होने पर, मैं उनके पास तुम्हारी प्रशंसा करूंगी।”

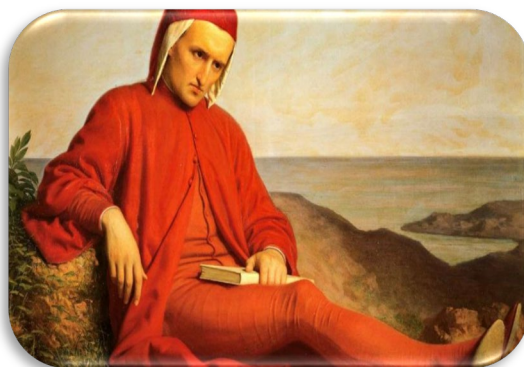
बिएट्रिस पोर्टिनारी (*Beatrice Portinari*), कुलीन इतावली फ्लोरेन्टाइन (*Florentine*) वंश की वह स्त्री जो महान इतावली साहित्यकार, दांते एलिघियरी (*Dante Alighieri*) की सबसे मशहूर व अतींद्रिय कृति, ‘ला दीविना कॉमेडिया’ (*‘La Divina Commedia’*) में उनकी ‘काव्य प्रतिभा’ (*‘Muse’*) की भूमिका निभाती हैं, यहां उनके लिए रोमन कवि वर्जिल (*Virgil*) की पुण्यात्मा से यह आह्वान करती हैं।

बिएट्रिस (*Beatrice*) यहां ‘दिव्य प्रेम’ (*divine grace*) का प्रतिनिधित्व करती हैं। यद्यपि वर्जिल स्वयं यहां ‘मानवीय विवेक’ (*human reason*) के प्रतीक हैं, तथापि सामान्य मध्यकालीन मानसिकता के अनुसार केवल ‘मानवीय विवेक’ ही मनुष्य को मोक्ष की ओर नहीं ले जा सकता। इसलिए केवल वर्जिल दांते को अंततः स्वर्ग में नहीं ले जा सकते और वहां तक पहुँचने में बिएट्रिस उन दोनों का मार्ग प्रशस्त करने के लिए स्वर्ग से स्वयं अवतरित होती हैं।

दांते के लंबे समय से खोये हुये प्यार बिएट्रिस ही ने उन्हें इस यात्रा में दांते का मार्गदर्शन करने के लिए व्यक्तिगत रूप से चुना। दांते यहां बिएट्रिस के आभारी होते हैं, और साथ ही इस बात से अभिभूत होते हैं कि बिएट्रिस अभी भी आध्यात्मिक क्षेत्र के दायरे में उनकी तलाश में हैं।

बिएट्रिस, वह स्त्री जिसे इतालवी महाकवि, दांते ने नौ साल की उम्र में अपनी पहली नज़र से अपनी अधिकांश कृतियां और लगभग अपना पूरा जीवन समर्पित किया, के बारे में वह कहा करते थे –

“उस समय से, उसके प्रेम ने मेरी आत्मा को
काफी नियंत्रित किया।”



अपनी ऐसी ही एक कृति, **‘ला वीटा नुओवा’** (*La Vita Nuova*) – **‘द न्यू लाइफ’** (*The New Life*) के लिए इतावली – में दांते ने बिएट्रिस के साथ अपने संबंधों का एक इतिवृत्त (chronicle) लिखा, जो गीतों से सुसज्जित उनकी एक गद्य कृति है। यहां वे बिएट्रिस के साथ हुये अपने भेंटों के बारे में साझा करते हैं, उनकी सुंदरता और अच्छाई की प्रशंसा करते हैं, उन दोनों के जीवन की घटनाओं के बारे में बताते हैं, और उनके लिए अपनी मनोभावनाओं की प्रकृति की व्याख्या करते हैं।

‘ला वीटा नुओवा’ उस दिन के बारे में भी अवगत कराती है जब दांते को उनकी प्रिय बिएट्रिस की मृत्यु के बारे में ज्ञात हुआ। उस घटना के बाद लिखी गयी कई पीड़ादायक कविताएं इसमें शामिल हैं। इसके अंतिम अध्याय में, दांते ने बिएट्रिस के बारे में तब तक कुछ नहीं लिखने की कसम खायी जब तक कि वह **“उनके बारे में ऐसा कुछ नहीं लिखते जो किसी भी स्त्री के बारे में पहले नहीं लिखा गया है।”**



दांते का यह वादा **‘ला दीविना कॉमेडिया’** में पूरा हुआ, जिसकी रचना उन्होंने कई वर्षों बाद पूरी की। बिएट्रिस – जो **इन्फर्नो** (नर्क) में उनकी **‘मध्यस्थ’**, **पुर्गातोरियो** के द्वीप पर्वत के माध्यम से स्वर्ग की यात्रा करने में उनका **‘लक्ष्य’**, और **पारादीसो** (स्वर्ग) में उनके **‘मार्गदर्शक’** की भूमिका में तटस्थ रहीं – के लिए अपने उच्चस्थ आध्यात्मिक प्रेम को व्यक्त करते हुये लगभग 40 वर्षों बाद, वर्ष 1321 में, दांते ने अपनी ओर से **‘ला दीविना कॉमेडिया’** में उनका समादर, अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक, पूरा किया।

बिएट्रिस की पहली नज़र में, **पुर्गातोरियो** में, दांते उतना ही अभिभूत होते हैं जितना वह नौ साल की उम्र में थे, और जब तक वह फिर से स्वर्ग में अपने स्थान पर नहीं पहुँचतीं, तब तक वह अपनी इस पूरी यात्रा में उनकी उपस्थिति से मोहित रहते हैं। उदात्त और आध्यात्मिक प्रेम की यह अभिव्यक्ति दांते के परमात्मा में पूर्णतया लीन होने के साथ ही समाप्त होती है।

पुर्गातोरियो – पर्गोटरी (Purgatory) के लिए इतालवी – दांते की ‘ला दीविना कॉमेडिया’ का दूसरा

अध्याय है, जो जीवन चक्र से विमुक्त हो चुकी आत्माओं की शुद्धि एवं मुक्ति के भाग्यक्रम में **इन्फर्नो** (नर्क) के बाद और **पारादीसो** (स्वर्ग) से पहले दर्शाया गया है। यह रोमन कवि वर्जिल द्वारा निर्देशित दांते के ‘पुर्गातोरियो-रूपी’ द्वीप पर्वत पर चढ़ाई करने के बारे में एक रूपक कथा (allegory) है।

जैसा कि दांते कांतिके (cantiche) की शुरुआती पंक्तियों में बताते हैं, पुर्गातोरियो वह स्थान है जिसमें –

“मानव आत्मा स्वयं को शुद्ध करती है और स्वर्गारोहण के लिए पश्चाताप से गुजरते हुये, अपने आप को स्वर्गानुरूप बनाने में जुटी होती है।”

कुछ ईसाई संप्रदायों के विश्वास के अनुसार, पुर्गातोरियो शारीरिक मृत्यु के पश्चात् शुद्धिकरण के लिए एक मध्यवर्ती अवस्था है। शुद्धिकरण की यह प्रक्रिया चयनित आत्माओं की शुद्धि का अंतिम पड़ाव है, जो **इन्फर्नो** के नरकवासियों के लिए आरक्षित न्यायक्षेत्र से पूरी तरह अलग है। परंपरागत रूप से, शास्त्रों के कुछ मतों के संदर्भानुसार, इस प्रक्रिया को पवित्र अग्नि के माध्यम से आत्मा के शुद्धिकरण के रूप में दर्शाया गया है।

‘ला दीविना कॉमेडिया’ – ‘द डिवीन कॉमेडी’ (The Divine Comedy) के लिए इतालवी – के द्वितीय काव्यांश, ‘पुर्गातोरियो’ के सर्वांग में, दांते द्वारा इसमें वर्णित द्वीप पर्वत से लेकर उसके सुदूर शीर्ष तक चढ़ाई करने के उद्देश्य से, रोमन कवि वर्जिल के मार्गदर्शन में तय किये गये तीन एवं एक-चौथाई दिवसीय यात्रा का वर्णन है – जो कि, भाग्यक्रम से, ‘भूस्वर्ग, ईडन’ की दहलीज़ पर पहुँचकर ही समाप्त होता है।



‘ला दीविना कॉमेडिया’ का मूल इतावली संस्करण 14,233 पंक्तियों की है जो कि तीन कांतिके (Cantiche) – एकवचन कांतिका (Cantica) – में विभाजित है जिनमें से नर्क (इन्फर्नो – *Inferno*), यातनालय या पापशोधनालय अथवा पर्गोटरी (पुर्गातोरियो – *Purgatorio*) और अंततः स्वर्ग (पारादीसो – *Paradiso*) प्रत्येक में 33 कैंटो (Canto) – इतावली बहुवचन कैंटी (Canti) – शामिल हैं।

‘पुर्गातोरियो’ या फिर ‘पर्गोटरी’ शब्द का उद्भव लैटिन के ‘पर्ज’ (*Purge*) शब्द से जाना जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ, ‘शुद्ध करना’ या फिर, ‘purify’ है। तदनुसार, दांते का पुर्गातोरियो उनके महाकाव्य में वर्णित द्वीप पर्वत पर भाग्यक्रम से की गयी उनकी अपार्थिव चढ़ाई का एक ऐसा ‘रूपक-काव्यांश’ है जहां वे वर्जिल द्वारा निर्देशित बताये गये हैं – अंतिम कुछ कैंटो को छोड़कर, जिस पड़ाव पर बिएट्रिस स्वयं उन दोनों का मार्ग प्रशस्त करती हैं। अपनी इस दिव्य संरचना की परिधि में, दांते अपने प्रिय बिएट्रिस का संबोधन ‘दिव्य प्रेम’ व ‘धर्मशास्त्र’ (Theology) के प्रतीक के रूप में करते हैं।

इन्फर्नो की तरह, पुर्गातोरियो में भी दांते कई विषयों के बारे में बताते हैं; ऐतिहासिक, आध्यात्मिक और यहां तक कि दार्शनिक भी।

अलंकारिक रूप से, पुर्गातोरियो, पश्चातापी ईसाई जीवन का प्रतिनिधित्व करता है।

‘पुर्गातोरियो’

इन्फर्नो में वो आत्माएं थीं जो हमेशा के लिए नर्क में ही रहेंगी क्योंकि उन्होंने अपने जीवनकाल में घोर पाप किया है लेकिन पुर्गातोरियो में वो आत्माएं हैं जिन्होंने अपने जीवनकाल में पाप तो किया है पर यहां रहकर वे अपने पापों की सज़ा काटेंगे जिसके पश्चात् वे स्वर्गारोही बन सकते हैं।



इस दृष्टिकोण से,
पुर्गातोरियो को एक ऐसे



संशोधनात्मक आयाम के रूप में देखा जा सकता है जहां मानवीय विकृतियों के सुधार हेतु अपार संभावनाएं मौजूद हैं। जबकि इन्फर्नो (नर्क) पापियों को दण्डित करने का स्थान है, पुर्गातोरियो एक ऐसा स्थान है जहां पर वे पापग्रस्त आत्माएं हैं, जिनके द्वारा अपनी मृत्यु से पहले पश्चाताप किया गया था। यहां उनका

शुद्धिकरण किया जाता है ताकि स्वर्गारोहण से पूर्व, उनकी आत्मिक शुद्धि के पश्चात्, उन्हें स्वर्गारोही बनाया जा सके।

अपनी इस अपार्थिव चढ़ाई का वर्णन करते हुये दांते, भाग्यक्रम से, पाप की प्रकृतियों, बुराईयों और पुण्य



के उदाहरणों के साथ-साथ, राजनीति और चर्च में उठाये गये नैतिक मुद्दों पर चर्चा करते हैं। यह महाकाव्य इस सिद्धांत को भी प्रस्तुत करती है कि सभी पाप प्रेम से ही उत्पन्न होते हैं – या तो दूसरों के नुकसान की ओर केंद्रित विकृत प्रेम, या अपूर्ण प्रेम, या अच्छी चीजों का अव्यवस्थित या अत्यधिक प्रेम।

इसलिए, *पुर्गातोरियो* में सांसारिक जीवन से जुड़े विषयों के लिए एक निरंतर लगाव समायी हुयी है, जिसके चलते दांते और वर्जिल से मिलने वाली आत्माओं का समूह, दांते की पार्थिव शरीर को यहां देखकर विस्मित रह जाती हैं।

दांते के *पुर्गातोरियो* में एक द्वीप पर्वत – *माउंट ऑफ पगोटरी* (*Mount of Purgatory*) – है, जो दक्षिणी गोलार्ध (southern hemisphere) में भूमि का एकमात्र टुकड़ा है। यह तीन खंडों – ‘*एन्टी-पगोटरी*’ (*Ante-Purgatory*), ‘*पगोटरी का मूल क्षेत्र*’ (*Purgatory proper*), और ‘*भूस्वर्ग, ईडन*’ (*Eden, the Earthly Paradise*) – में विभाजित है।

द्वीप पर्वत की तलहटी का सबसे निचला स्तर अर्थात् ‘*एन्टी-पगोटरी*’ या ‘*एन्टी-पुर्गातोरियो*’ उन आत्माओं के लिए आरक्षित है



जिनकी पापशुद्धि में देर हुयी थी।



ऊपरी पर्वतांश के सर्वांग में समाविष्ट ‘*पगोटरी के मूल क्षेत्र*’ में सात सतह या ‘*टेरेस*’ (*terrace*) हैं, जो कि *सात घातक पापों* (*seven cardinal sins*) – *अहंकार* (*Pride*), *ईर्ष्या* (*Envy*), *क्रोध* (*Wrath*), *आलस्य* (*Sloth*), *लालसा* (*Avarice*), *अति आहार* (*Gluttony*) और *कामुकता* (*Lust*) – के प्रतीकात्मक दायरों को दर्शाती हैं।

समूचे द्वीप पर्वत के उच्चस्थ शिखर की गोद में संलिप्त वृत्त-खंड पर दांते अंततः ‘ईडन के भूस्वर्ग’ में खुद को पाते हैं, वह स्थान जहां वे बिएट्रिस के साथ फिर से जुड़ते हैं, जिनके प्रति दांते के प्रेम ने उनके इस महाकाव्य को प्रेरित किया।



कैंटो – I-IX

पुर्गातोरियो या ‘पर्गोटेरी’ का दायरा वहां से शुरू होता है जहां से **इन्फर्नो** का लुप्त होता नज़र आता है।



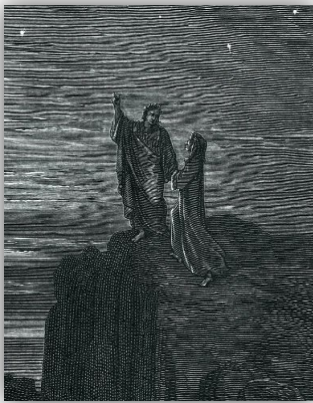
इन्फर्नो के अंतिम पड़ाव में हम देखते हैं कि दांते और वर्जिल नर्क के नौवें चक्र में पहुँच गये थे जो ‘गद्दारों’ (*traitors*) के लिए है और वहां से आगे बढ़ते हुये वे दोनों नर्क के बीचोबीच पहुँच जाते हैं। नर्क के केंद्र में उन्हें **शैतान (Satan)** खुद दिखता है जो और कोई नहीं बल्कि ‘द फॉलेन एंजेल, लूसिफ़र’ – ‘*The Fallen Angel, Lucifer*’ – था। वह भी बाकियों की तरह बर्फ में फँसा

हुआ था और इन सब में वह सबसे ज्यादा तकलीफ में था। दांते और वर्जिल यहां **लूसिफ़र** के छः पंखों को भी देख पाते हैं, जो बर्फीले कैद में एकदम उजरे-उजरे से नज़र आ रहे थे और यहां से गुज़रते हुये वे दोनों नर्क को पार करने के लिए **लूसिफ़र** के शरीर को पार करने की कोशिश करते हैं।

इन्फर्नो के अंधकारमय नरक तल के उग्र घेरे की गोद में सिमटे अवरोही चक्र के माध्यम से दांते द्वारा की गयी इस अतींद्रिय यात्रा में उनका साथ रोमन कवि वर्जिल देते हैं, जो यहां **मानवीय विवेक** का प्रतीकत्व करते हैं। दुनिया के इस मृत केंद्र के तीक्ष्ण चक्रतल पर **लूसिफ़र (Lucifer)** या **शैतान** को पार करते हुये, दांते और वर्जिल, नर्कलोक से बाहर निकलते हैं।



वास्तविक जगत में वे दोनों पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के केंद्र से गुज़रकर इस अंतिम स्तर को पार करके **पुर्गातोरियो** के द्वीप पर्वत के समुद्र तट पर निकलते हैं। यहां वे दक्षिणी गोलार्ध पर पहुँच जाते हैं जहां उन्हें कई पहाड़ियां दिखती हैं।



10 अप्रैल, सन् 1300 की रात को वे दोनों, दांते और वर्जिल, अब एक खुली आसमान के नीचे पहुँच जाते हैं, जहां उन्हें कई सितारे नजर आते हैं। *इन्फर्नो* के अधोलोक की अंधेरी गहराइयों से गुजरने के बाद, *पुर्गातोरियो* के ऊपर का नीला आस्मान उन्हें तरोताजा कर देता है। यहां के सितारे तथाकथित धार्मिक गुणों के प्रतीक हैं – ‘न्याय’ (*Justice*), ‘विवेकी’ (*Prudence*), ‘संयम’ (*Temperance*) और ‘धैर्य’ (*Fortitude*) – ऐसे गुण जिन्हें ‘ईसाई

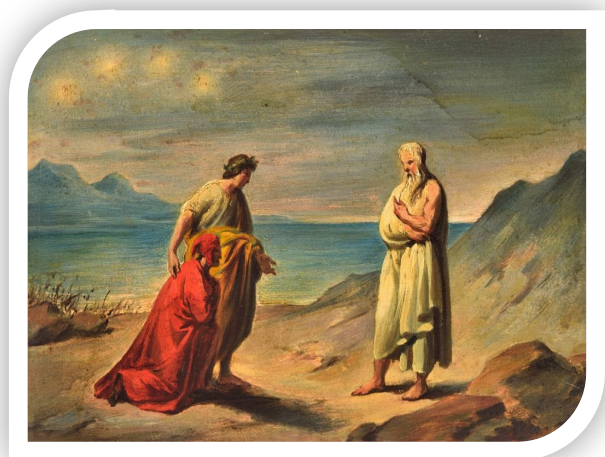
अनुग्रह’ (*Christian grace*) से अंजान मूर्तिपूजकों द्वारा भी अपनाया जा सकता है।

‘दिव्य कॉमेडी’ के दूसरे अध्याय के प्रारंभ में दांते और वर्जिल अपने आप को एक नये दिन की शुरुआत में पाते हैं। चलते-चलते, वे एक तट के किनारे पहुँचते हैं जहां पर उन्हें एक नाव ठहरते हुये दिखायी देता है। उस नाव पर एक देवदूत द्वारा लायी गयी आत्माएं हैं जो कि सात घातक पापों से मुक्त होकर स्वर्गारोहण हेतु ‘माउंट ऑफ पर्वेटरी’ की चढ़ाई करने के लिए नियत हैं। दांते भी समय बर्बाद नहीं कर सकते, लेकिन वह इन आत्माओं के साथ *पुर्गातोरियो* से बाहर रात बिताने के लिए मजबूर हैं, जो उनके विपरीत, रात्रि में यात्रा नहीं कर सकते।



अगली सुबह दांते और वर्जिल एक पर्वत की चढ़ाई करने की शुरुआत करते हैं जिसकी निचली स्तर में बसी तलहटी पर ही उन्हें दो श्रेणियों की आत्माएं दिखायी देती हैं। पहली श्रेणी की आत्माओं को कवि ने ‘बहिष्कृत’ या फिर, ‘*The Excommunicate*’ कहा है और दूसरी श्रेणी की आत्माओं को कवि ‘देर से पश्चाताप करने वाले’ या फिर, ‘*The Late Repentants*’ के नाम से पुकारते हैं।

पुर्गातोरियो के प्रवेशद्वार के सबसे निचले स्तर में बसी तलहटी का क्षेत्र **एन्टी-पुर्गेटरी (Ante-Purgatory)** या **एन्टी-पुर्गातोरियो (Ante-Purgatorio)** के रूप में जाना जाता है। यह चरण पर्वत के अत्यंत नीचे स्थित है, जो कि ऐसी चयनित आत्माओं के लिए आरक्षित एक प्रतीक्षालय के सदृश है जिनकी पापशुद्धि में देर हुयी थी। क्योंकि पुर्गातोरियो को स्वर्ग की ओर अग्रसर एक ऊँचे द्वीप पर्वत के रूप में दर्शाया गया है, यहां यह ईश्वर की महिमा को दर्शाता है कि वे कितने दयावान हैं – जो चाहते हैं कि अधिक से अधिक आत्माएं उनके सान्निध्य में स्वर्ग तक आएँ।



यहां भी वर्जिल दांते का मार्ग प्रशस्त करने के उद्देश्य से उनके साथ जुड़े रहते हैं। इन्फर्नो के अंधेरे को अब पीछे छोड़ते हुये, वे दोनों स्वर्ग की चढ़ाई करने से पूर्व, पापशुद्धि के इस स्थान पर आ पहुँचते हैं। पुर्गातोरियो का मुख्य द्वार रोमन कवि केटो (Cato) द्वारा संरक्षित है – जिन्हें स्वयं ईश्वर ने उस पर्वत के प्रवेशपथ के संरक्षक के तौर पर वहां

स्थायित्व प्रदान किया हुआ है। इन्फर्नो का माहौल पुर्गातोरियो के आत्मिक प्रतीक्षालय से काफी अलग है – जहां इन्फर्नो का तनावशील परिवेश घुटन और निराशा से परिपूर्ण है, पुर्गातोरियो का वातावरण इससे अधिक आशावादी और राहतमंद है, यहां तक कि वहां के दृश्य भी कुछ अधिक मनोरम हैं।



एन्टी-पुर्गेटरी का दायरा आत्माओं की दो मुख्य श्रेणियों के लिए सीमांकित प्रतीक्षालयों का एक अलौकिक संधि-स्थल है। इनमें '**बहिष्कृत**' (The Excommunicate) – जिनके तपस्वी ईसाई जीवन में देरी या कमी थी – और '**देर से पश्चाताप करने वाले**' (The Late Repentants) शामिल हैं। यह संक्रातिक स्थान इन्फर्नो के **कैंटो III** में पाये जाने वाले निष्पक्ष एवं उदासीन स्वर्गदूतों के लिए आरक्षित स्थान के समरूप है।



इनमें से पहली श्रेणी के निवासियों के बीच वे दोनों कवि उन लोगों की आत्माओं का सामना करते हैं, जिन्होंने ईश्वर के नियमों का पालन न करने की ज़िद के कारण अपने ढीठ ईसाई जीवन को विलंबित किया। इसके परिणामस्वरूप, इन्हें चर्च (church) से ‘बहिष्कृत’ या फिर ‘The Excommunicate’ करार दिया गया और इसलिए, अब वे पुर्गातोरियो के इस आयाम में खुद को पाते हैं। यहाँ उन्हें उतनी ही अवधि के लिए प्रतीक्षा करते रहने हेतु दण्डित किया जाता है जो कि उस अवधि का तीस गुना है जो उन्होंने अपने ढीठ जीवनकाल में हठी बने रहकर बिताया

था। उन दोनों की मुलाकात यहां सिसिली के राजा, मैन्फ्रेड (Manfred, King of Sicily) की आत्मा से होती है, जो उन्हें यह बताते हैं कि पुर्गातोरियो के इस क्षेत्र में किसी भी आत्मा की निश्चित समयावधि केवल ऐसे ईसाइयों की प्रार्थनाओं से ही कम हो सकता है जो जीवलोक के निवासी रहते हुये ईश्वरीय कृपा के प्रार्थी हैं।

मैन्फ्रेड उन्हें यह भी कहते हैं कि यहां पर फँसी हुयी पापग्रस्त आत्माओं को स्वर्ग की यात्रा तय करने के उद्देश्य से चढ़ाई करने में मदद के लिए भी जीवितों से उनकी प्रार्थनाओं की आवश्यकता है। उन प्रार्थनाओं के अभाव में, इन आत्माओं को पृथ्वी पर बिताये हुये अपने ढीठ जीवन की अवधि का तीस गुना समतुल्य समय यहां पर काटना है। दांते का यहां मानना है कि आत्मा केवल एक है और वह अपने आप में ही परिपूर्ण है।

आगे चलकर, वे एन्टी-पुर्गेटरी के पर्वतांश की तलहटी के अंतिम चरण पर पहुँच जाते हैं, जहां पर ‘लापरवाहों’ या ‘देर से पश्चाताप करने वालों’ (The Late Repentants) की आत्माएं मौजूद होती हैं। इस स्तर पर, उनका सामना मृत राजाओं की उन लापरवाह आत्माओं से होती है जिनके द्वारा अपने शासनकाल में अत्यंत नगण्य भूमिका निभायी गयी थी। साथ ही, कुछ ऐसी आत्माएं भी थीं जिन्होंने जीवित रहते हुए कभी पश्चाताप नहीं किया।



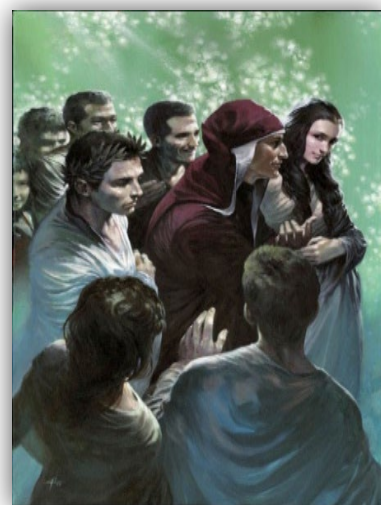
यहां दांते का सामना कुछ ऐसी आत्माओं से भी होता है जो अपनी दुर्दशा के चलते निराशा में डूबी हुयी दिखायी देती हैं, जो इस बोझ तले दबी हैं कि उन्हें चढ़ाई शुरू करने के लिए जीवन भर इंतजार करते रहना है। केवल जीवितों द्वारा की गयी प्रार्थनाएं ही उनकी इस असीमित प्रतीक्षावधि को कम करने की क्षमता रखती हैं। यहां



पर फँसी हुयी आत्माओं के दलदल में से बेलाक्वा (Belaqua) – दांते का आलसी दोस्त – कहता है कि कैसे उसने अपने पश्चाताप को अंतिम क्षणों तक के लिए स्थगित कर दिया था, कि अब उसे *पुर्गातोरियो* में जीवन भर प्रतीक्षा करते रहना है और इसलिए उसे चढ़ाई करने की जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए।

बेलाक्वा, जो अपने जीवनकाल में एक अत्यंत आलसी *फ्लोरेन्टाइन* संगीतकार हुआ करता था, यहां कुछ रहस्यमयी ढंग से *पुर्गातोरियो* के इस कैटो में पूछता है – “हे भाई, चढ़ाई से क्या लाभ होगा?” (“*O frate, andar in sù che porta?*”)। बेलाक्वा अपनी लापरवाही के लिए खुद को *एन्टी-पर्गेटरी* में पाता है, और उसकी प्रतीक्षा की अवधि ने उसकी आलसी प्रवृत्तियों में कोई सुधार नहीं किया है, जैसा कि दांते उसे इस प्रकार वर्णित करते हैं – “यदि ‘सुस्ती’ उसकी बहन होती, तो वह उससे भी अधिक लापरवाह होता” (“*Più negligente/che se pigrizia fosse sua serocchia*”)। बेलाक्वा के मामले में, स्वर्ग की चढ़ाई करने हेतु उस पर्वतांश पर जीवन भर प्रतीक्षा करने के लिए दण्डित होने पर भी, अपनी लापरवाही के प्रति उसकी प्रवृत्तियों पर कोई सुधारात्मक या सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है।

एन्टी-पर्गेटरी में, आत्माओं को स्वर्गारोहण हेतु कुछ क्षणों से कई ज्यादा समय के लिए इंतजार करना पड़ता है। उदाहरणस्वरूप, **बहिष्कृत** श्रेणी की आत्माओं को मृत्यु से पहले बिताये गये अपने हठी जीवन का तीस गुना समय इंतजार करना होता है, जबकि **लापरवाहों** या **देर से पश्चाताप करने वालों** को अपने जीवनकाल के बराबर समयावधि के लिए पर्वतांश की इन ऊँचाइयों पर ही प्रतीक्षा करते रहना है।



इसके उपरान्त, यहां पर वो आत्माएं भी फँसी हुयी थीं जो हिंसक मृत्युओं का सामना कर चुकी थीं लेकिन अपने अंतिम समय में पश्चाताप करने में कामयाब रहीं। यहां उनसे मिलने वाली आत्माओं में से एक उन्हें यह बताती हैं कि वह *पुर्गातोरियो* में कैसे पहुँचीं। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि छुरा घोंपे जाने के कारण हुयी अपनी हिंसक मृत्यु के पश्चात् जब उन्हें मुक्ति की प्राप्ति नहीं हुयी, वह ईश्वरीय कृपा की कामना करती हैं, जो इन आत्माओं को *पुर्गातोरियो* में रहने की अनुमति देते हैं, जहां पर उन्हें प्रतीक्षारत रहना है।

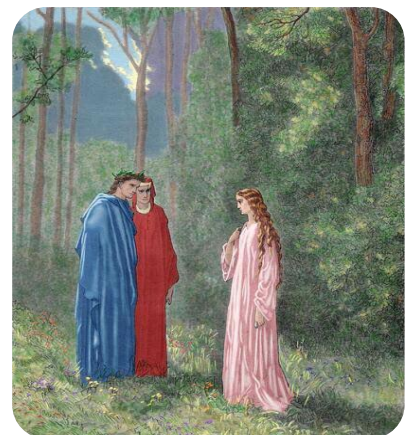


उनमें से यह *पिया दि तोलोमी* (*Pia de' Tolomei*) थीं, जो *सीएना* (*Siena*) शहर के एक कुलीन इतावली वंश की स्त्री थीं। '*ला पिया*' (*La Pia*) के नाम से जानी जाने वाली वह स्त्री यहां पर इसलिए सीमाबद्ध थीं क्योंकि उनके पति ने उनकी हत्या की थी।



पिया यहां दांते से यह साझा करती हैं कि वह *सीएना* शहर से हैं और कैसे *मारेम्मा* (*Maremma*) शहर में उनकी मृत्यु उनके पति के हाथों हुयी थी – जिसमें वह अपने एक छिपे हुये संकेत के माध्यम से उन्हें यह इशारा कर रही होती हैं कि *सिएना* को यहां एक ऐसी जगह के रूप में देखा जा सकता है जहां पर मानवीय संबंध बनते हैं, जबकि *मारेम्मा* वह जगह है जहां संबंध टूटते हैं।

अंत में, वह दांते से यह आह्वान करती हैं कि वह अपनी इस अपार्थिव यात्रा के सम्पन्न होने पर, जैसे ही पृथ्वी पर लौटते हैं, उन्हें वह अपनी प्रार्थनाओं में जीवित रखें। वह ऐसा इसलिए करती हैं क्योंकि प्रार्थनाएं ही *पुर्गातोरियो* में उनके समय को कम कर सकती हैं और वह जानती हैं कि पृथ्वी पर शायद ही कोई उन्हें अपनी प्रार्थनाओं में शामिल करेगा।



एन्टी-पगोटरी के ऊँचे पर्वतांश पर चढ़ाई करते समय दांते को बेहद थकान महसूस होती है, तो वर्जिल उन्हें ऊपरी ओर चढ़ाई करते रहने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। लाक्षणिक तौर पर, यह दर्शाता है कि कैसे पाप से छुटकारा पाने के लिए हमें चढ़ाई करने हेतु प्रयास करते रहना है, जबकि 'नर्क' की अंधेरी, बर्फीली गहराइयों में उतरना बहुत आसान है।



यद्यपि बेलाक्वा यहां आलस्य और निराशा की तस्वीर के रूप में उजागर होता है, एन्टीपगोटरी में अन्य आत्माओं का उद्देश्य इससे कुछ अधिक होता है। वर्जिल व दांते को यहां पर 'दरबारी प्रोवेन्कल कवि', सोर्डेलो –



'Provencal court poet', Sordello – वहां स्थित 'राजकुमारों की घाटी' में ले जाते हैं, और वहां पर एकत्रित लापरवाह शासकों की आत्माओं की ओर इशारा करते हैं।

सोर्डेलो से दांते को यह पता चलता है कि इन्फर्नो में नर्क के नौ उग्र चक्रों के विपरीत, पुरातोरियो में ऐसी कोई निश्चित सीमांचल नहीं है। यहां स्वच्छंदता का एक आभास है



क्योंकि यह मूलतः आध्यात्मिक तीर्थयात्रा का एक स्थान है। सोर्डेलो यहां दांते और वर्जिल का मार्ग प्रशस्त करने के लिए राजी होते हैं। फिर, वे सभी एक 'मनोरम घाटी' में समाविष्ट सुंदर परिदृश्य पर पहुँचते हैं जो रंग और सुगंध से समृद्ध है। जब वे वहां पर बसी आत्माओं को साल्वे रेजिना (Salve Regina) – 'Hail Holy Queen' के लिए ईसाई-धर्म विषयी लैटिन – के मधुर गीत गाते हुये सुनते हैं, तो ऐसा लगता है कि जैसे वो लापरवाह राजाओं और शासकों की छाया आकृतियां भी इस जश्न में वहां पर शामिल हैं। यहां पर कई ऐतिहासिक यूरोपीय शासकों व नामी नेताओं के उल्लेखनीय मिसाल मौजूद होते हैं, जिनसे उन तीनों कवियों की भेंट होती है।

इन्हीं के साथ, इस श्रेणी में फँसी हुयी परेशान आत्माओं में *सोर्डेलो* भी है, जो वर्जिल की ही तरह, इतावली शहर *मैंटुआ (Mantua)* से है। जब *सोर्डेलो* को उस महानुभाव की पहचान का पता चलता है, तो वह सम्मानपूर्वक उनके समक्ष झुक जाते हैं। यह प्रसंग यहां वर्जिल को इस काव्यांश की अग्रभूमि में रखने में सहायक होता है, क्योंकि *इन्फर्नो* के निवासी होने के नाते, वर्जिल यहाँ *पुर्गातोरियो* में अपने साथी के मार्गदर्शक के रूप में *इन्फर्नो* की तुलना में कुछ कम सक्षम हैं।

सोर्डेलो यहां पर ‘*माउन्ट ऑफ पर्गेटरी*’ के निवासी के रूप में, ‘*पर्वत के नियम (Rule of the Mountain)*’ की व्याख्या करने में सक्षम है – कि सूर्यास्त के बाद आत्माएं यहां आगे की चढ़ाई करने में असमर्थ हैं। अलंकारिक रूप से, सूर्य यहां पर ईश्वर का प्रतिनिधित्व करता है – जिसका गूढ़ अर्थ यह है कि पश्चातापी ईसाई जीवन में प्रगति केवल ‘*ईश्वरीय अनुग्रह (divine grace)*’ के माध्यम से ही की जा सकती है।



शाम के समय, जब *अफसोस (Regret)* और *आशा (Hope)* एक साथ हावी होने लगते हैं, दांते देखते हैं कि आत्माएं अपने चेहरों और हाथों को ईश्वर की ओर श्रद्धापूर्ण मुद्रा में केंद्रित कर रही होती हैं – दिन का अंत होने से पहले प्रार्थना के गीत गाने के लिए। सहसा, *ईडन* के प्रवेशद्वार की रखवाली करने वाले स्वर्गदूतों का एक जोड़ा वहां उतरता है। वे *प्रलोभन के सर्प (The Serpent of Temptation)* से इन आत्माओं का बचाव करेंगे हैं जो दिन के

आखिर में यहां पर आकर मंडराता है।

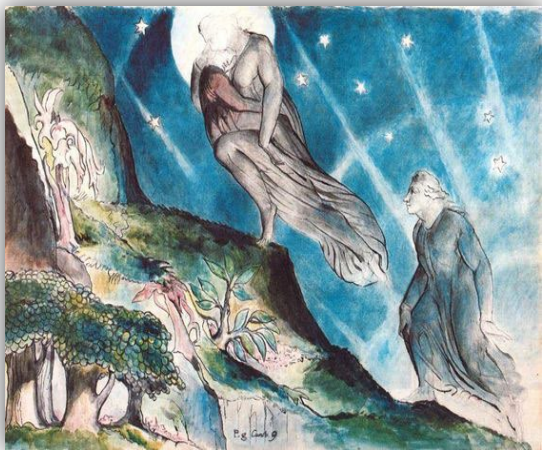
जब दांते अपनी आँखें ऊपर स्वर्ग की ओर केंद्रित करते हैं तो उन्हें वहां तीन अग्निशिखाएं दिखायी देती हैं – जो *आस्था (Faith)*, *आशा (Hope)* और *परोपकार (Charity)* का प्रतिनिधित्व करती हैं। तभी वहां एक सर्प पहुँचता है, जिसने शायद *भूस्वर्ग, ईडन* के बगीचे में *ईव (Eve)* को निषिद्ध फल खाने के लिए बहकाया था। वह अपने सिर को अपनी पूँछ से घुमाकर एक चक्र बनाने लगता है जो इस दुनिया में पाप के शाश्वत व अनिष्ट चक्र के समरूप है। इस पड़ाव पर, सारे देवदूत बाज़ में रूपान्तरित हो जाते हैं, और उड़ान भरते हुये, उस अनिष्टकारी सर्प को अपनी ज्वलंत तलवारों की नोक से दूर भगाने में जुट जाते हैं।



सूर्यास्त के पश्चात्, दांते अपने पुराने मित्र, न्यायाधीश *नीनो (Judge Nino)* की आत्मा से मिलते हैं, जो चकित हैं कि दांते एक जीवित प्राणी के रूप में यहां के आध्यात्मिक यात्री बने हुये हैं – जो कि ईश्वर की असीम कृपा का ही एक संकेत है। फिर वह दांते से यह कहते हैं कि पृथ्वी पर लौटने के पश्चात् वह उनकी पुत्री को उनके लिए प्रार्थना करने को कहें।

अपनी नींद की कमी पर काबू पाते हुये, दांते अब तक की अपनी अपार्थिव यात्रा के दौरान पार्थिव समयानुसार तीन रातें बिता चुके हैं – जब से वह *इन्फर्नो* में पहली बार पहुँचे थे। यहां दांते फिर से निद्रावस्था में चले जाते हैं – जिस पड़ाव पर वह अपना पहला स्वप्न देखते हैं। स्वप्न में दांते देखते हैं कि एक उड़ते हुये सुनहरे चील द्वारा वह छीनकर लाये गये हैं और वे *फ़ीनिक्स (Phoenix)* – *अमरपक्षी* – की भाँति पवित्र अग्नि में झुलस रहे हैं।





जब दांते जागते हैं, वर्जिल उन्हें यह कहकर प्रोत्साहित करते हैं कि जब वह निद्रावस्था में थे, सेंट लूसिया (Saint Lucia) आयीं और उड़ान भरते हुये, सोये हुये दांते को आसमान की ओर ले गयीं – उनकी यात्रा को और आसान बनाने के लिए। वर्जिल उन्हें यह ज्ञात कराते हैं कि कैसे सेंट लूसिया की पुण्यात्मा ने स्वयं उनकी मदद की और उन्हें सीधे पुर्गातोरियो के मूल क्षेत्र

तक पहुँचाया। इस तरह, वे दोनों, पुर्गातोरियो के मूल क्षेत्र की दहलीज़ पर पहुँचते हैं।

यहां वे विभिन्न रंगों से सुसज्जित तीन सीढ़ियों वाले एक प्रवेशद्वार पर आ पहुँचते हैं, जहां की शीर्ष सीढ़ी पर एक देवदूत उसके शीर्षासन पर उन्हें आसीन नज़र आते हैं। स्पष्ट रूप से, यह द्वार, 'तपस्या' के त्रिपक्षीय संस्कारों – *tripartite* 'Sacrament of Penance' – का प्रतीक है और



वह देवदूत इसके संरक्षक होने के साथ-साथ, उपासक भी हैं। स्वर्गारोहण के उद्देश्य से आत्मिक शुद्धि हेतु की गयी इस तपस्या में तीन चरण हैं – पश्चाताप (Repentance), स्वीकारोक्ति (Confession) और क्षमा (Forgiveness)।

यहां के द्वाररक्षक देवदूत दांते को क्रमशः वहां पर मौजूद संगमरमर (Marble), पत्थर (Stone) और पोर्फिरी (Porphyry) की तीन सीढ़ियों को पार करने के लिए कहते हैं जो कि तपस्या के इन तीन चरणों का

प्रतीकत्व करती हैं। जब दांते उनसे वह द्वार खोलने के लिए प्रार्थना करते हैं, तो देवदूत अपनी तलवार से उनके सिर पर सात 'पी' ('P') – पेक्कटम (Peccatum) या फिर, 'पाप' के लिए लैटिन का चिह्न स्वरूप – के निशान अंकित करते हैं, जो कि सात घातक पापों के अनुरूप है, जिनकी यहां शुद्धि किये जाने की आवश्यकता है।

फिर वह सेंट पीटर (Saint Peter) द्वारा उन्हें दी गयी एक सुनहरी और एक चांदी की चाबियों का उपयोग करते हुये पुर्गातोरियो के प्रवेशद्वार को खोलते हैं और इसके साथ ही वह दांते और वर्जिल को इस द्वार के माध्यम से गुजरकर पुर्गातोरियो के मूल क्षेत्र में प्रवेश करने देते हैं।

जैसे ही वर्जिल और दांते वहां पर प्रवेश करते हैं, देवदूत उन्हें चेतावनी देते हैं कि वे पीछे मुड़कर न देखें या फिर उन्हें इसकी परिधि के उस पार वापस भेज दिया जाएगा। पुर्गातोरियो के मूल क्षेत्र में प्रवेश करने पर वे दोनों खुद को सात सतह या 'टेरेस' के समक्ष पाते हैं। इस पड़ाव पर, इनसे गुजरने हेतु चढ़ाई करने के लिए आगे बढ़ने से पहले, देवदूत का उनसे यह कहना होता है कि हर बार जब सात घातक पापों में से एक-एक करके प्रत्येक की सतह पार होती जाएगी, तो साथ ही हर बार एक 'पी' उनके सिर से हटा दिया जाएगा।

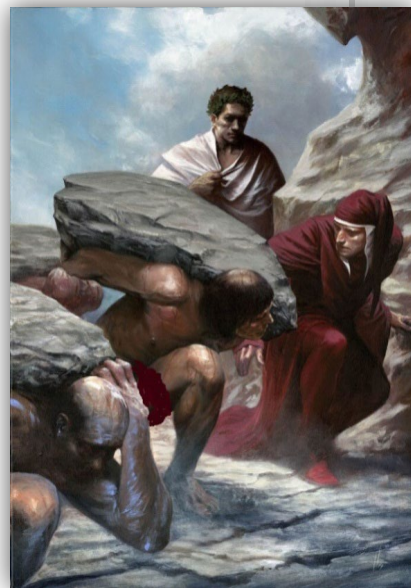


कैंटो – X-XII

जिस सतह पर वे कवि सबसे पहले प्रवेश करते हैं, वह उन पश्चातापी आत्माओं से भरी हुयी होती है जो अपने प्रारंभिक जीवन में अहंकारी हुआ करते थे। कवियों को इस सतह की दीवारों के ऊपरांश पर विनम्रता के उदाहरणस्वरूप कई मूर्तियां बड़ी कलात्मक ढंग से यहां गढ़ीं हुयीं नज़र आती हैं, जो कि अहंकार की भावना के विपरीत हैं – जैसे कि ईश्वरपुत्र यीशु को कुमारिनी अवस्था में जन्म (virgin birth) देने के लिए वर्जिन मेरी (Virgin Mary) के चयन की दैवीय घोषणा कर रहे स्वर्गदूत गेब्रियल (Gabriel) और मेरी के बीच का वार्तालाप एवं सम्राट ट्रेजन (Emperor Trajan) द्वारा अपनी यात्रा को रोकते हुये एक असहाय विधवा को न्याय दिलाने का विनयपूर्ण उदाहरण। इन अभिमानियों को कभी भी इन मूर्तियों को देखने का मौका नहीं मिलता, क्योंकि उनकी पीठ हमेशा भारी चट्टानों के बोझ तले झुकी हुयी होती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्हें इन चट्टानों का भार अपनी पीठ पर उठाना पड़ता है, ताकि उन्हें उनके पापों से मुक्त किया जा सके।



पुर्गातोरियो का यह प्रथम सतह या टेरेस, ‘अहंकार’ – ‘Pride’ – का है। यहाँ, दांते और वर्जिल देखते हैं कि इस सतह पर पश्चाताप कर रही पापग्रस्त आत्माएं अपने अभिमान को कम करने के लिए ‘विनम्रता के पर्वत’ – ‘Mountain of Humility’ – पर भारी चट्टानों का बोझ उठा रही होती हैं। इसके अनुरूप, सतह की दीवारों के निम्नांश पर अहंकार की जीवंत मिसालों के रूप में लूसिफ़र (Lucifer) या शैतान, टावर ऑफ़ बेबेल (Tower of Babel), रानी नायोबी (Queen Niobe), एरैक्नी (Arachne), इत्यादि के उदाहरण मौजूद होते हैं।



पुर्गातोरियो के कैंटो XI में दांते की भेंट तीन श्रेणियों की आत्माओं से होती है, जो तीन प्रकार की अहंकारी प्रवृत्तियों का प्रतीकत्व करती हैं। मारेम्मा शहर के एक महान कुलीन रह चुके, ओम्बर्टो एल्डोब्रान्देस्की (Omberto Aldobrandeschi), जो कुलीन परिवार और उच्च वंश से होने के अहंकार का प्रतिनिधित्व करते हैं; ओदेरिसी द गुबियो (Oderisi da Gubbio), एक लघु कलाकार जो कला और मानव उद्यम से जुड़े अहंकार को दर्शाते हैं और सीएना के प्रमुख गीबेलीन (Ghibellin) योद्धा रह चुके, प्रोवेन्ज़नो सल्वनी (Provenzano Salvani), जो सत्ताधारी होने के अहंकार के प्रतिरूप हैं।

ओदेरिसी यहां पर कलात्मक वर्चस्व सहित सभी सांसारिक वस्तुओं की व्यर्थता की ओर सबका ध्यान केंद्रित करते हैं। वे कहते हैं कि एक कलाकार को कभी भी गर्व नहीं करना चाहिए, क्योंकि अंततः सब कुछ अतीत बन जाता है – कोई भी मानव कला कभी समाप्त नहीं होती, और सभी महान कलाकारों को उनके उत्तराधिकारी पार कर जाते हैं। श्रेष्ठ कलाकारों के रूप में, ओदेरिसी पहले दृश्यात्मक कलाकारों, सिमाबु (Cimabue) और जॉटो (Giotto) के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं – जिनकी उत्कृष्ट चित्रकारिता



को कवि, गाइडो गिनीज़ेली (Guido Guinizelli) पार कर जाते हैं, और जिन्हें पुनः ‘ग्लोरिया दे ला लिंग्वा’ (‘gloria de la lingua’) – या फिर, ‘हमारी भाषा की महिमा’ (‘The glory of our tongue’) के लिए लैटिन – के रचनाकार, गाइडो कैवलकान्ति (Guido Cavalcanti) पार कर जाते हैं।

सांकेतिक तौर पर, ओदेरिसी यहां निश्चित रूप से दांते की ओर एक छिपे हुए संदर्भ की तरफ इशारा कर रहे होते हैं – वह प्रतिभावान कवि, जो भविष्य में गिनीज़ेली और कैवलकांति, दोनों के कलात्मक वर्चस्व को अपनी कृतियों द्वारा पार करते हुये, आगे चलकर अपनी कलात्मक दक्षता को सिद्ध करते हैं।

तीन तरह के अहंकारों – उच्च परिवार के कुलीन वंशज होने का अहंकर, कलात्मक वर्चस्व का अहंकार और सत्तारूपी अहंकार – का प्रतीकत्व करने वाली इस प्रथम सतह के दायरे में तीन ऐसी संरचनात्मक आयामों का अस्तित्व है जो सद्गुणों, जीवात्माओं और अवगुणों का प्रतिनिधित्व करती हैं। यहां पर हम यह भी पाते हैं कि पुर्गातोरियो के मूल क्षेत्र – *Purgatory proper* – के भाग्यक्रम के घेरे में फँसी हुयी आत्माओं का संबोधन दांते

अकसर ‘छाया आकृतियों’ या ‘*shadows*’ के रूप में करते हैं।



प्रथम सतह की इन दृश्यों से गुज़रने पर, दांते और वर्जिल की भेंट यहां एक देवदूत से होती है जो उन्हें अगली सतह की ओर जाने का संकेत देते हैं। वह ‘विनम्रता के देवदूत’ – ‘*The Angel of Humility*’ – हैं, जो अहंकार की मनोभावना के विपक्षी होने के नाते, इन दो सतहों के बीच के क्षेत्र का संरक्षण करते हैं। जैसे ही वे दोनों अगली सतह की ओर अपने

कदम बढ़ाने लगते हैं, वह देवदूत दांते के सिर पर अपना पंख फेरते हुए वहां से एक ‘पी’ के निशान को मिटा देते हैं जो कि पूर्व में द्वाररक्षक देवदूत द्वारा वहां पर चिह्न स्वरूप अंकित किया गया था।

कैंटो – XIII-XIV

पुर्गातोरियो की अगली सतह उन आत्माओं के लिए आरक्षित है, जिन्हें ‘ईर्ष्या’ (*Envy*) – जो भाग्यक्रम में ‘सात घातक पापों’ में से दूसरा है – से स्वयं को शुद्ध करना है। पर्वतांश की यह दूसरी सतह उन



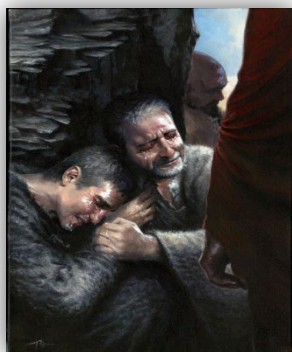
ईर्ष्यालु पश्चातापियों की आत्माओं से भरी होती है जिनका अधिकांश सांसारिक जीवन उन वस्तुओं की कामना करने में व्यतीत हुआ जो कि दूसरों को अत्यधिक खुशियां प्रदान करती हों, इस हद तक कि उन्हें इनसे वंचित करने के लिए इनके द्वारा नुकसान भी पहुँचाया गया।

जैसे ही वे कविगण इस सतह में प्रवेश करते हैं, वे ऐसी कई आवाजें सुनते हैं जो उदारता की मिसालों से गूँज रही होती हैं, जो ईर्ष्या की मनोभावना के विपरीत हैं। वहीं दूसरी ओर, ये आवाजें, ईर्ष्या के उदाहरणों को भी साझा कर रही होती हैं। इस भाग्यक्रम के घेरे में फँसी पश्चातापी आत्माएं यहां भूरे रंग के वस्त्रों में नज़र आती हैं जो यह नहीं देख पातीं कि वो कहाँ जा रही हैं क्योंकि उनकी आँखें लोहे के तार से सिलकर बंद कर दी गयी हैं।



यहां पर सुनायी देने वाली असंबद्ध आवाजें पश्चाताप कर रही आत्माओं को ईर्ष्या के विपरीत, निःस्वार्थ प्रेम के मूल्यों की याद दिलाने के लिए निरंतर बहती रहती हैं। इस सतह पर कैद आत्माएं अपनी पलकें लोहे की तार से सिली हुयी पाती हैं, और इसलिए, यहां के पापशुद्धि के उदाहरण दृश्यमान होने के बजाए, विशेषतः

श्रव्यमान हैं।



ऐसे में उनकी स्थिति उन शिकारी पक्षियों के अनुरूप है, जिन्हें तेज़ शिकारी बनाने हेतु *श्येनपोषक (Falconer)* द्वारा उनकी पलकें सिल दी जाती हैं – ताकि वे नेत्रहीन रहते हुये भी अपने शिकार-कौशल में और परिपक्व हो सकें।

दोपहर के समय, वे दोनों कवि सूर्य की सुनहरी किरणों से प्रज्वलित अपने तेजस्वी चेहरों सहित इस सतह की पश्चिमी ओर बढ़ रहे होते हैं। उसी क्षण, एक चकाचौंध करने वाली आभा सहसा दांते की भौंह पर प्रहार करती है, जिसको वह मानते हैं कि यह सूर्य के कारण होता है। परन्तु, जब वह उससे आँखें फेर लेते हैं, तो यह नयी रोशनी तब भी उसी रफ़्तार से बनी रहती है, और वह अपनी आँखें मूंद लेते हैं। वर्जिल उन्हें यहां यह ज्ञात कराते



हैं कि एक देवदूत की आहट अभी भी उनकी पार्थिव इंद्रियों की तुलना में अत्यधिक ऊर्जावान है, पर साथ ही यह भी कहते हैं कि संभवतः हमेशा उनके साथ ऐसा न हो।

इस पड़ाव पर, ‘परोपकार के देवदूत’ – ‘*The Angel of Charity*’ – उनके समक्ष अपनी ज्योतिर्मयी आभा बिखेरते हैं एवं दांते के सिर से एक और ‘पी’ को ओझल करते हुये, उन्हें अगली सतह पर आगे बढ़ने का आमंत्रण देते हैं।

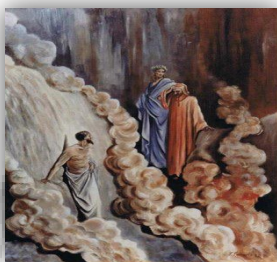
कैंटो – XV- XVII



अपनी अतींद्रिय यात्रा के इस मोड़ पर, दांते और वर्जिल, *पुर्गातोरियो* के द्वीप पर्वत पर तीव्रता से अपना मार्ग प्रशस्त कर रहे होते हैं। एक संरक्षक देवदूत द्वारा निर्देशित किये जाने पर, वहां की तीसरी सतह की ओर वे आगे बढ़ रहे होते हैं, जिस पड़ाव पर दांते को वर्जिल यह समझाते हैं कि कैसे आध्यात्मिक प्रेम का विस्तार-क्षेत्र केवल उतना ही बढ़ता है जितना कि हम उसे साझा करते हैं।

इस सतह में फँसी हुयी पापग्रस्त आत्माएं खुद को ‘क्रोध’ (*Wrath*) की भावना से मुक्त करने की कोशिश में जुटी हुयी होती हैं। यहां पर मौजूद उदाहरणों में सबसे प्रमुख *सेंट स्टीफन (Saint Stephen)* की आखरी प्रार्थना है, जिन्हें यीशु के नाम पर प्रचार करने के कारण अपने शहर से बहिष्कृत कर, उन पर पत्थरों से वार करते हुये मौत के घाट उतार दिया गया।

जैसे ही वहां सूरज डूबने लगता है, उसकी रोशनी को रोकते हुये, घने धुएँ के समरूप विषम बादल उन दोनों की ओर सर्पाकारी गति से बढ़ने लगती हैं जिससे दांते अपनी आँखें बंद कर लेते हैं। यहां पर वर्जिल का अनुसरण कर रहे दांते अपना हाथ उस रोमन कवि के कंधे पर रखते हैं।



तब सांसारिक बुद्धिजीवी, *मार्को द लोम्बार्डो*

(*Marco de Lombardo*) से उनकी मुलाकात होती है – जो क्रोध के आवेश में आकर, मनुष्यों को गुणों की कमी के लिए दोषी ठहराते हैं, और सभी नेताओं में से अधिकांश को उनके कुशासन के लिए उनके बीच मंडराते हुये धुएँदार बादल

वहां की ‘क्रोधाग्नि’ के ही सूचक हैं।

आगे चलकर, दांते और वर्जिल यहां के संरक्षक, 'अमन के देवदूत' – 'The Angel of Peace' – से मिलते हैं, जो उन्हें सूर्यास्त से ठीक पहले चौथी सतह तक पहुंचने के लिए चढ़ाई के अगले पड़ाव पर ले जाने हेतु उनका मार्ग प्रशस्त करते हैं। एक बार फिर, उस देवदूत का पंख दांते की भौंह को फेरता है, और तीसरे 'पी' का वह चिह्न हटा देता है जो पूर्व में वहां अंकित किया गया था।



कैंटो – XVIII- XIX



यहां की अगली सतह उन लोगों की आत्माओं के लिए आरक्षित है, जो अपने सांसारिक जीवन में अत्यंत आलसी रह चुके थे। इसलिए, यह सुस्त आत्माएं हमेशा के लिए बिना आराम के इस सतह के चारों ओर दौड़ने में व्यस्त रहती हैं, क्योंकि 'आलस्य' ('Sloth') के विपरीत, उनके सांसारिक जीवन में कभी भी उत्साह या उमंग नहीं था – खासकर जब उसका नाता प्रेम से जुड़ा हुआ हो।

अपनी अबाध गति से बढ़ती हुयी इन छाया आकृतियों के वहां से धुमिल होने से पूर्व, उन दोनों कवियों को ऐसा आभास होता है जैसे कि 'सुस्ती' के दुष्परिणामों के उदाहरणों से वहां का माहौल गूँज रहा हो। समानांतर रूप से, वहां के परिवेश में निरंतर बह रही आवाजों के माध्यम से मिसालों की जो लहरें इस सतह से गुजरती हैं, वह अधिकांशतः जोश और उमंग की होती हैं।

शाम के समय, दांते को वर्जिल *पुर्गातोरियो* की नैतिक संरचना के बारे में बताते हैं, और कैसे 'सात घातक पापों' का संबंध वस्तुतः प्रेम से है। आधी रात को, जैसे ही दांते को नींद आ रही होती है, आत्माओं की एक झुण्ड तीव्र गति से उनके पास से गुजरती है। भाग्यक्रम के इस दलदल में फँसी ये आत्माएं एक दूसरे से और तेज़ी से आगे बढ़ने का आग्रह कर रही होती हैं।





इसी सतह पर, उस रात को, जब दांते नींद में मग्न होते हैं, तो वह भोर होने से पूर्व एक और स्वप्न देखते हैं, जिसमें उन्हें एक 'विकृत स्त्री' का दृश्य दिखता है, जो मायावी रूप से एक सुंदर 'साइरन' (Siren) – एक तरह की 'मत्स्यस्त्री' – में रूपान्तरित हो जाती है। दांते के स्वप्न में आने वाली यह 'मत्स्यस्त्री' अव्यवस्थित या अत्यधिक प्रेम का प्रतीकत्व करती है, जो अपने आप में 'लोभ', 'अति आहार' एवं 'वासना' की एक जीवंत अभिव्यक्ति है।

अपने विचित्र स्वप्न के इस पड़ाव पर, जैसे ही उस रहस्यमयी स्त्री का भेद उजागर होने वाला होता है, दांते अगले दिन के सूरज की किरणों की आभा में खुद को जागते हुये पाते हैं। तभी वहां उनके समक्ष 'उमंग के देवदूत' – 'The Angel of Zeal' – अपनी दिव्यज्योति से उनका स्वागत करते हैं, जिनका पंख उनके चौथे 'पी' के निशान को भी वहां से हटा देता है। इसके पश्चात्, वे तीनों स्वर्गारोही उस सतह से निकलते हुये पाँचवी सतह की ओर चढ़ाई करने लगते हैं।

कैंटो -XIX-XXII

दांते और वर्जिल अब पाँचवीं सतह पर पहुँच जाते हैं, जहाँ पर लोभी (*avaricious*) और कौतुक (*prodigal*) आत्माएं अपने आप को इन दुर्गुणों से मुक्त करने में जुटी हुयी होती हैं। यहां पर मौजूद छाया आकृतियां यह मानती हैं कि इन अवगुणों से उनका शुद्धिकरण केवल एक ही जगह पर स्थिर रहकर कठोर चट्टानों पर लेटने से ही संभव है।



उनमें से पोप एड्रियन V (*Pope Adrian V*) एक होते

हैं, जो दांते को यह बताते हैं कि वह कैसे चुनाव जीतने पर, कार्यभार ग्रहण करने के बाद ही, अपनी लालसा का पश्चाताप कर पाए। इसके उपरान्त, अपना पदभार संभालने के केवल अड़तीस दिनों बाद, उनके प्रतिष्ठापन से पहले ही, उनकी मृत्यु हो गई।



वर्जिल और दांते फिर इस सतह के चारों ओर घूमते हुये लालसा और गरीबी की अन्य मिसालों के बारे में जान पाते हैं।

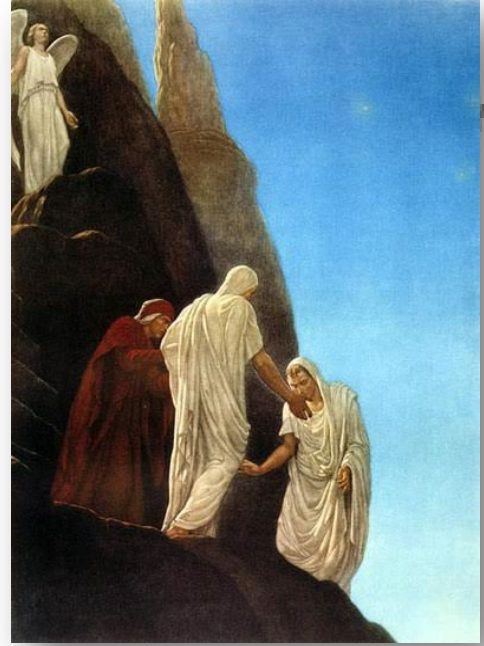
जैसे ही वे आगे बढ़ते हैं, उस समूचे पर्वतांश की रुह उनके पैरों के नीचे काँपने लगती है और वे ईश्वर की स्तुति गाती हुयी एक आवेगपूर्ण कंठस्वर सुनते हैं। वर्जिल यहां दांते को आश्वस्त करते हैं कि उन्हें इससे डरने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि ऐसा तब ही होता है जब एक और स्वर्गारोही आत्मा शुद्ध हो जाती है और *पुर्गातोरियो* के शीर्ष तक पहुँचने के लिए ऊपर की ओर अपनी चढ़ाई प्रारंभ करती है।

दांते और वर्जिल इस द्वीप पर्वतांश के उस क्षेत्र से आगे बढ़ ही रहे होते हैं, जब उनके पैरों तले ज़मीन पुनः काँपने लगती है क्योंकि एक और आत्मा शुद्ध हो गयी है और अपने स्वर्गीय शिखर के गंतव्य लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रही होती है। यह लैटिन कवि



स्टेशियस (Statius) हैं, जो स्वर्ग की चढ़ाई करने के लिए उनके साथ यहां शामिल होते हैं। इसके उपरान्त, वह उनसे यह कहते हैं कि कैसे वे वर्जिल की संगति में आने का अवसर पाकर अत्यंत प्रसन्नचित्त हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वर्जिल की अप्रतिम कृति, महाकाव्य 'एनीड' ('Aenid') के वह प्रशंसक हैं – जिससे वह अपने जीवनकाल में अत्यंत प्रेरित व अभिभूत रहे हैं।

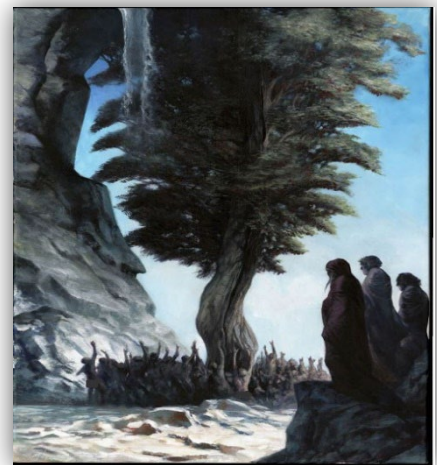
इस पड़ाव को पार करने पर, उन तीनों को वहां के अगले संरक्षक, 'समभाव के देवदूत' – 'The Angel of Moderation' – द्वारा बधाई दी जाती है, जो दांते के सिर से एक और 'पी' का निशान हटाते हैं और उनका स्वागत वहां की छठी सतह या 'ट्रेस' पर करते हैं। वर्जिल और स्टेशियस यहां बातचीत करते हुये अगले कगार की ओर बढ़ते हैं।



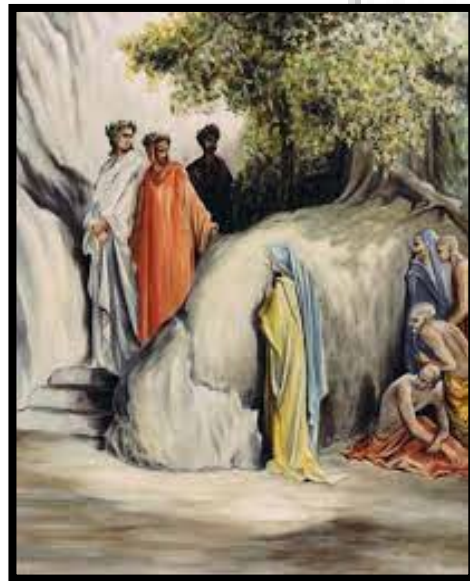
स्टेशियस यहां बताते हैं कि वह 'लोभी' नहीं बल्कि 'कौतुक' थे, लेकिन उन्होंने वर्जिल की कृति से प्रेरित होकर अपनी 'कौतुक' प्रवृत्तियों को 'रूपान्तरित' किया, जिसने उन्हें ईश्वर और काव्य-रचना की ओर निर्देशित किया। स्टेशियस फिर उन्हें यह बताते हैं कि कैसे 'बपतिस्मा-प्राप्त' ('baptised') होने के बाद भी, वे एक गुप्त ईसाई बने रहे, और इसमें हुयी 'सुस्ती' ही पिछली सतह पर उनकी मौजूदगी का कारण बन गयी।

कैंटो – XXII-XXV

वे तीनों अब छठी सतह में प्रवेश करते हैं, जहां 'अति आहार' ('Gluttony') से पीड़ित आत्माओं की शुद्धि हो रही होती है। इस मोड़ पर, वे एक असामान्य फलदार वृक्ष को देख पाते हैं जिसे ऊपर की चट्टानों द्वारा सींचा जा रहा होता है। इसकी शाखाओं के भीतर से पुकारने वाली निष्प्राण आवाज़ उन्हें यह ज्ञात कराती है कि इसके दायरे में आने वालों के लिए फल और जल, दोनों को रोक दिया जाता है, ताकि अति आहार का चयन करने वाली जीवात्माओं को संयमी तरीकें अपनाने के लिए प्रेरित किया जा सके।



इसलिए, यहां पर फँसी हुयी पश्चातापी आत्माएं आहार एवं जल रहित पायी जाती हैं। अपनी पापशुद्धि हेतु वे कष्टदायी भूख और प्यास का अनुभव करती हैं, जबकि उनके चारों ओर फलों से लदे हुये ढेर सारे वृक्ष मौजूद होते हैं। यह आत्माएं इसलिए ऐसे पीड़ित रहती हैं क्योंकि वे कभी भी इन वृक्षों तक नहीं पहुँच सकतीं – जिसके फलस्वरूप, उनके निष्प्रभ चेहरों में सिमटी हुयी उनकी आँखें गहरी डूबी हुयीं नज़र आती हैं और अत्यंत दुर्बलता के चलते क्षयग्रस्त होने के कारण वो अत्यंत क्षीणकाय प्रतीत होती हैं। इसके उपरान्त, इन वृक्षों में से गूँज रही आवाजें यहां आत्मसंयम के उदाहरण दे रही होती हैं, जो ‘अति आहार’ की लालसा के विपरीत है।



यहां की चढ़ाई के दौरान, दांते को यह आश्चर्य होता है कि अशरीरी आत्माओं के लिए यह कैसे संभव है कि भूख से पीड़ित प्राणियों की भाँति वे प्रत्यक्ष रूप से रुग्णकाय नज़र आएँ। इसकी व्याख्या करते हुये, स्टेशियस यहां आत्मा की प्रकृति एवं पार्थिव शरीर के साथ उसके आत्मिक संबंध की ओर उनका ध्यान आकर्षित करते हैं।

स्टेशियस यहां तीन बुनियादी ईसाई मान्यताओं पर ज़ोर देते हैं। प्रथमतः ईश्वर प्रत्यक्षतया आत्मा की रचना करते हैं। फिर, यह आत्मा और शरीर, जब जुड़ जाते हैं, तो एक एकीकृत व्यक्ति बन जाते हैं। अंततः मृत्यु के पश्चात् भी, आत्मा का अस्तित्व बना रहता है और वह पार्थिव तत्वों के नियंत्रणाधीन रहता है, जब तक वह आत्मशुद्धि के माध्यम से गुज़रते हुये, शरीर के पुनर्जीवन की प्रतीक्षा करता है।

यहां से फिर आगे बढ़ते हुये, वे दांते के बचपन के दोस्त, फोरेसे दोनाटी (*Forese Donati*) से मिलते हैं, जो अपनी जीवित पत्नी, नेला दोनाटी (*Nella Donati*) की प्रार्थनाओं के चलते इस पर्वतांश पर तेज़ी से आगे की चढ़ाई कर पाये हैं।



फोरेसे यहां उन तीनों का ध्यान पादरियों और कवियों सहित अन्य यशस्वी लोगों की ओर आकर्षित करते हैं। तभी इनकी भेंट यहां फोरेसे के कलात्मक पूर्वज रह चुके, बोनागिंता ऑर्बिच्चियानि (*Bonagiunta Orbicciani*) से होती है जो न केवल दांते की ‘ला वीटा नुओवा’ के प्रशंसक के रूप में अपना परिचय देते हैं, बल्कि इसमें उनकी काव्य शैली को ‘दोलचे स्टिल नुओवो’ (*‘dolce stil*

nuovo) – ‘एक नयी मधुर शैली’ (*A sweet new style*) के लिए इतावली – के रूप में दर्शाते हैं। इस शैली में, कवि की प्रशंसा की पात्र – उनकी ‘काव्य प्रतिभा’ के रूप में दर्शायी गयी ‘स्त्री’ – को एक ‘स्वर्गदूत’ (*angel*) या फिर ईश्वर से जोड़ने वाली ‘आध्यात्मिक सेतु’ के रूप में वर्णित किया जाता है। इस प्रकार के काव्यों की प्रकृति भौतिक-विषयी नहीं होती, बल्कि ‘दोलचे स्टिल नुओवो’ का प्रेम एक प्रकार का ‘ईश्वरीय प्रेम’ कहा जा सकता है।

इस काव्य शैली को निहारते हुये, *बोनागिंता* यहां बिएट्रिस की प्रशंसा में लिखी गयी दांते की पंक्ति,

‘*Ladies that have intelligence of love*’ (‘जिन स्त्रियों में प्रेम-रूपी बुद्धिमत्ता है’) का स्मरण कराते हैं – वह स्त्री, जिनसे आगे चलकर, ईडन के भूस्वर्ग में, दांते की भेंट होनी है।



यहां से प्रस्थान करने पर, दांते, वर्जिल और स्टेथियस फिर इस सतह की दहलीज़ पर उपस्थित देवदूत की ओर अपने कदम बढ़ाने लगते हैं। तब उनका स्वागत यहां के संरक्षक, ‘आत्मसंयम के देवदूत’ – ‘*The Angel of Temperance*’ – करते हैं।

कैंटो-XXV-XXVII

दांते के सिर से छठे ‘पी’ के हटा दिये जाने के पश्चात्, वे अब वहां की सातवी सतह में प्रवेश करते हैं, जहां आत्माओं को आग की लपटों की एक दीवार से गुजरते हुये ‘वासना’ (*Lust*) से मुक्त किया जा रहा होता है – जो उनके स्वर्गारोहण के पथ पर बाधा बनी हुयी होती है। उनका सामना यहां आत्माओं के एक ऐसे समूह से होता है जो अपने जीवनकाल में *वर्जिन मेरी* और *देवी डायना* (*Goddess Diana*) की भाँति ‘सतीत्व’ के पवित्र, निष्कलंक व प्रेरणादायक उदाहरण रहे हैं। फिर वे एक अन्य समूह से गुजरते हैं जिनकी वासना समलैंगिक वर्ग की ओर केंद्रित थी, जो *सोदोम* (*Sodom*) और *गोमोरा* (*Gomorrhah*) की कहानी का आह्वान करते हैं।



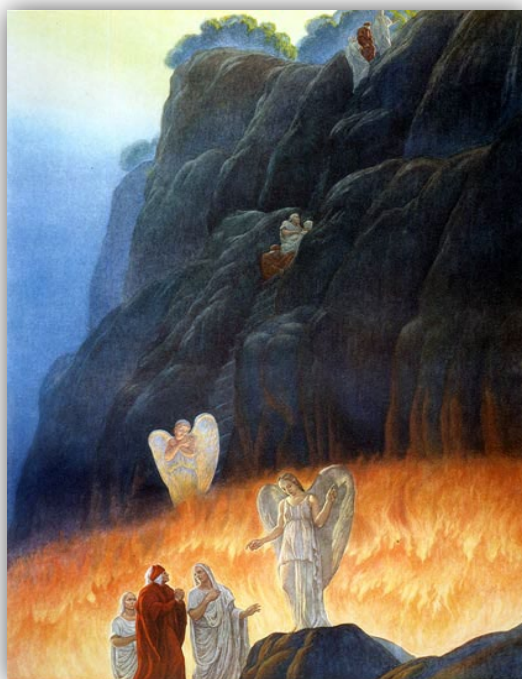
आगे चलकर, उनमें से कुछ महाकवियों की आत्माओं से उनकी मुलाकात होती है। फिर, जैसा कि *स्टेशियस* यहां उन दोनों कवियों के संज्ञान में लाते हैं, *एंटी-पगोटरी* ही ‘*माउंट ऑफ पगोटरी*’ का एकमात्र क्षेत्र है जोकि ‘स्थलीय उल्का’ (*terrestrial meteorites*) के अधीन है – जैसे कि वह हमारे पार्थिव जगत की प्रवृत्तियों का ही एक समानांतर आयाम हो।



हालांकि *पुर्गातोरियो* में किसी विशिष्ट प्रकार के पाप से शुद्धिकरण की आवश्यकता पूर्ण होती है, फिर भी इस अंतिम चरण की यह ‘अग्नि-परीक्षा’ एक प्रकार की ‘आस्था की लपक’ – ‘*Leap of Faith*’ – के रूप में यहां उभरकर

आती है जो कि, आगे चलकर, स्वर्गसुख की खोज में स्वर्गलोक तक पहुँचने के लिए आवश्यक है। दांते के लिए, ईश्वर से प्रेम करने और अपनी अटूट आस्था से उन्हें संमिलित करने में पूर्णरूपेण समर्पण का यह कदम, वास्तव में, सबसे कठिन कदम है।

वे तीनों कवि अब ‘*माउंट ऑफ पगोटरी*’ के शीर्ष की अंतिम बाधा – ‘ज्वाला की दीवार’ – के समक्ष खुद को पाते हैं। जबकि पगोटरी के अन्य स्तरों में आत्माओं की शुद्धिकरण के लिए विशिष्ट परीक्षाएं थीं; प्रत्यक्ष रूप से, यहां पर सभी आत्माओं को इस अंतिम बाधा से गुजरना होता है, भले ही उनकी पूर्व में शुद्धि हुयी हो और उन्हें ईश्वर द्वारा प्रदान की गयी दैवीय गूँज की स्वीकृति प्राप्त हो – जैसा कि हम *स्टेशियस* के साथ अनुभव करते हैं। तब उन्हें उस ज्वलंत दीवार के इस पार उनकी तरफ एक देवदूत वहां पर नज़र आते हैं, जो यह बताते हैं कि निश्चित रूप से उन्हें इस



बाधा को पार करना होगा, ताकि वे दूसरी तरफ मौजूद अगले देवदूत को ‘एक सुदूर गीत’ (*a distant song*) गाते हुये सुन सकें, जिसके माध्यम से वह उनका आगे मार्गदर्शन करेंगे।

वह इस आयाम के संरक्षक, 'सतीत्व के देवदूत' – 'The Angel of Chastity' – हैं, जो अपनी निर्मल आभा से उन कविगणों का स्वागत करते हैं और इस पड़ाव पर, आगे बढ़ते हुये, जैसे ही दिन की रोशनी फीकी पड़ने लगती है, वह दांते के सिर से सातवे व अंतिम 'पि' को लुप्त करते हुये, उन्हें पुनः अवगत कराते हैं कि वहां से आगे बढ़ने के लिए इन्हीं आग की लपटों के माध्यम से उन्हें गुजरना है, जिससे फिर दांते कुछ सोच में पड़ जाते हैं।

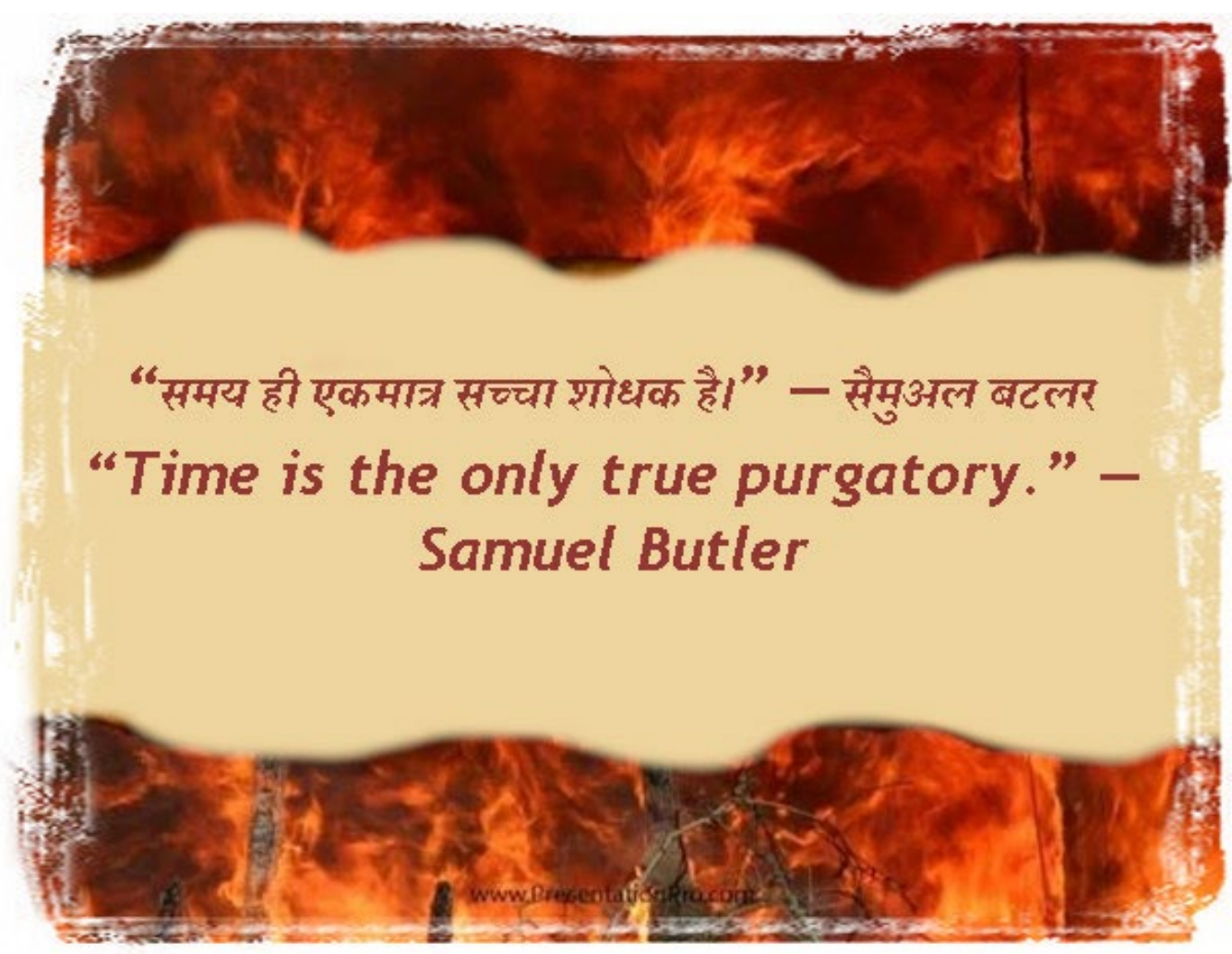
इस कगार पर, वर्जिल अपना हाथ उनकी ओर बढ़ाते हुये, दांते को यात्रा के प्रारंभ में अपने प्रिय बिएट्रिस से 'ईडन के भूस्वर्ग' में मिलने के वादे का स्मरण कराते हैं – जिसके चलते ऐसा करने के लिए वे उन्हें राजी कर लेते हैं।



पवित्र अग्नि से आत्मशुद्धि के पश्चात्, वे अब *पुर्गोतोरियो* के उच्चस्थ शिखर तक चढ़ाई करने हेतु वहां की अगली व अंतिम सतह तक ले जाने वाली चरणों के चक्रतल पर आ पहुँचते हैं – जहां पर पवित्र अग्नि द्वारा 'वासना' से शुद्धि की अपेक्षा में आत्माओं की आग में झुलसने की प्रक्रिया जारी है। जैसे ही वे *भूस्वर्ग*, *ईडन* की ओर अग्रसर होते हुये अपने कदम बढ़ाने लगते हैं, रात हो जाती है और वहां पर घनघोर अंधेरा छा जाता

है, जिससे वे स्वर्गारोही यहां से आगे नहीं बढ़ पाते।

स्वर्गारोहण के इस पड़ाव पर अब, फिर से, दांते की आँख लग जाती है और भोर होने से कुछ समय पूर्व, वह अपना तीसरा स्वप्न देखते हैं, जैसा कि इस शृंखला के अगले व अंतिम लेख में दर्शाया जायेगा...



“समय ही एकमात्र सच्चा शोधक है।” — सैमुअल बटलर
“Time is the only true purgatory.” — Samuel Butler

www.PresentationPro.com

पे रिविज़न सेल

सिद्धार्थ मौर्य
लेखापरीक्षक

ना कोई व्यक्तिगत वैर था उनसे
और ना ही थी स्वहित में
सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक मनमर्ज़ियां।
फ़िर भी, जाने क्यों
बीते दिनों जनता दरबार के दरवाज़े की
बार-बार बज रही थी घंटियाँ।
उनके मन की मानी होती तो रोटी से बेईमानी होती
और सिद्धांतों की यह शीत युद्ध घमासान नहीं होती।
और जितना सोचती है जनता जनार्दन
'पे रिविज़न सेल' की डगर उतनी आसान नहीं होती।

की बोर्ड पर 'कथकली' करती उनकी उँगलियों से
एक्सेस, एक्सेल, पावरप्वाइंट और वर्ड पर
काम सहज हर बार हो गया।
जाने कैसे, कब और कहाँ,
'सॉफ़्टवेयर' गहरा यार हो गया
सब सोचते ही रह गए और
पलक झपकते ही आउटपुट बेशुमार हो गया
एफीश्येंसी, एक्यूरेसी और स्पीड देख इनकी
संगणक के सगे वालों में आजकल मुस्कान नहीं होती।
और जितना सोचती है जनता जनार्दन
'पे रिविज़न सेल' की डगर उतनी आसान नहीं होती।

वैसे तो संगणक के संग कुछ घंटों में ही
पुतलियाँ हाथों में और
मेड्यूला ऑब्लौनोटा घुटनों में आमरण अनशन करता है।
पर, इनके सात घंटे कर्म को समर्पित होकर भी
आठवां घंटा अगले सात की रणनीति पर मंथन करता है।
बेचैन रातें, भारी सा दिल, जगी आँखें-
पीआरसी की कामयाबी
यूँ ही हर किसी पर मेहरबान नहीं होती।
और जितना सोचती है जनता जनार्दन
'पे रिविज़न सेल' की डगर उतनी आसान नहीं होती।



बगैर इनके अनुभवों के रची नहीं जा सकती थी
'एनआइसी मेल' में 'रिकवरी' और 'इन्क्रीमेंट' में
कमी की कहानियां।

महीनों हुई हर पहलू पर मंथन
और खंगाले अतीत की गहराइयों में दफ़न रूल्स
और 'स्वामी' की मुँहजबानियां।
लाख कोशिशें हुई
उन रूठे आँकड़ों को मनाने की
पर, खामियों के बाज़ार में कोशिशों की जुबान नहीं होती।
और जितना सोचती है जनता जनार्दन
'पे रिविज़न सेल' की डगर उतनी आसान नहीं होती।

चाहे कितनी भी कड़वी सच्चाई होती थी मनवानी
इनकी नोटिंग एवं ड्राफ़्टिंग की मिठास की दाद सबने मानी थी।

परंपरा, प्रतिष्ठा, अनुशासन –

शख्सियत के इन तीन स्तंभों पर सँवरने वाली
सच्चाई के लिए सहकर्मियों से भी भिड़ने वाली
खूब लड़ी मर्दानी
ये तो 'सीसीएस पे रूल्स' वाली रानी थी।
छोटी-छोटी कहानियाँ जब उतर आती हैं अपनी उड़ान पर
तो ऊँचाइयों की कोई आसमान नहीं होती।
और जितना सोचती है जनता जनार्दन
'पे रिविज़न सेल' की डगर उतनी आसान नहीं होती।

बाकी न रह जाए कोई कसर
तो 1858 से सारे ऑर्डर
और स्वामी के धूल लगे पन्नों को ही बना लिया हमसफ़र।
'विक्टिम' की 'वीकेंड' कर रही थी
जब सपनों में बसर
एरियर्स और रिकवरीसीट में खर्च हो रहे थे
इनके आठों पहर।
'पीआरसी' के पन्नों में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज ऑर्डर में
उन थकी रातों की जद्दोजेहद की कोई दास्तान नहीं होती।
और जितना सोचती है जनता जनार्दन
'पे रिविज़न सेल' की डगर उतनी आसान नहीं होती।





‘सीसीएस पे रूल्स’ में बन ज़ीरो से हीरो
अपने ‘इन्साइक्लोपीडिया’ में
‘पे फिक्सेशन’ के पन्नों को भी तब जोड़ दिया।
कुछ चंद महीनों में ही जब
सीसीएस पे रूल्स के नियमों के साथ साथ
हौसलों को भी विनोदपूर्वक तोड़ दिया।
प्राचीनतम संस्कृति से
पाश्चात्य की आधुनिकता तक
सिद्ध आँखों में
सिद्धि की कोई गुमान नहीं होती।
और जितना सोचती है जनता जनार्दन
‘पे रिविज़न सेल’ की डगर उतनी आसान नहीं होती।

कुछ तो बात थी व्यक्तित्व में, इनके नेतृत्व में
तभी तो सुबह तिरस्कार में उठी सारी उँगलियाँ
शाम तक जुड़कर नमस्कार हो गई।
‘सीसीएस पे रूल्स का चाणक्य’ नाम से सुप्रसिद्ध
इनकी सरपरस्ती में सृजित
सात-सात चन्द्रगुप्त से
धनानंद मंडली में हाहाकार हो गई।
ऊँचे पदों पर फ़ैसले उसूलों के कच्चे धागे में बंधे
जनहित में सख्त हो सकते
पर, हृदय इनकी पाषाण नहीं होती।
और जितना सोचती है जनता जनार्दन
‘पे रिविज़न सेल’ की डगर उतनी आसान नहीं होती।



लेखापरीक्षा दिवस 2022 की कुछ झलकियाँ



हिंदी पखवाड़ा 2022 का झलकियाँ





महानिदेशक लेखापरीक्षा (के) कोलकाता के तत्वावधान में आयोजित फुटबॉल प्रतियोगिता की कुछ झलकियाँ





महानिदेशक लेखापरीक्षा (के) कोलकाता के तत्वावधान में आयोजित कैरम बोर्ड प्रतियोगिता की कुछ झलकियाँ

